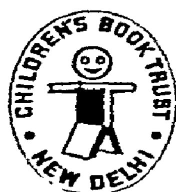
# मनमौजी मामाजी

लेखिका : इरा सक्सैना
चित्रांकन : वन्दना जोशी




चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित हिन्दी की प्रथम बाल-साहित्य लेखक प्रतियोगिता में हास-परिहास वर्ग में मनमौजी मामाजी नामक पांडुलिपि को द्वितीय पुरस्कार मिला। इसकी लेखिका इरा सक्सैना स्वतन्त्र रूप से लेखन कार्य करती हैं। सी बी टी द्वारा इनकी अन्य प्रकाशित पुस्तकें हैं, 'आशा का उदय' और 'कम्प्यूटर के जाल में'।





मुद्रण 1990
पुनर्मुद्रण 1993, 1994, 1996

MANMAUJI MAMAJI


ISBN 81-7011-514-0

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवं न्यास के मुद्रणालय, इंद्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित।

# अनोखा हॉर्न

"अरे!... गौरव... संजू... खाना लग गया है। अपने मामाजी को भी बुलाते लाओ..." अम्मा का दनदनाता हुआ आदेश घर की दीवारों से टकरा कर गौरव को झिंझोड़ गया। झट अपना उपन्यास एक ओर पटक वह एन सी सी , कैडेट की तरह सावधान होकर खड़ा हो गया। संजू अभी लेटा ही था कि गौरव की आंख के एक इशारे पर वह भी उठ गया और दोनों भाई मां के हुक्म का पालन करने नीचे चल दिये।

अभी वे आखिरी सीढ़ी पर ही थे कि 'अ फां फां पां पां' की निरन्तर होती कर्कश चीत्कार ने मन के सारे तार, जिस्म और दिमाग के कल-पुर्जों को झनझना दिया। गौरव और संजू हड़बड़ा कर एक-दूसरे से टकराये और घबरा कर सीढ़ी उतरते हुये गिर गये। ओफ! क्या स्वर था जैसे मल्लयुद्ध की घोषणा का नाद फूटे टीन के नगाड़े पर किया जा रहा हो, मानों हाथी की चिंघाड़ और सियार की पुकार का मिश्रित कलरव किसी जंग लगे भोंपू से होकर गुजर रहा हो। उंगली से कानों को खुजाते हुये गौरव बोला, "लगता है मामाजी ने कार का हॉर्न ठीक कर लिया है।" संजू ने बेदिली से मुंह लटका कर भाई की हां में हां मिलायी।

बाहर जाकर देखा कि मामाजी कार का बोनट खोले इस घोर निनाद से बेखबर कार के इंजन की ओर निहार रहे थे। पास खड़ी पड़ोसियों की पालतू लूसी मामाजी की ओर भय मिश्रित, अचम्भित दृष्टि से ताक रही

थी। दो राहगीर मुंह बिगाड़े उसी ओर देख रहे थे और प्रेस वाला हरिया बिखरे कपड़े समेटता हुआ मुंह ही मुंह में कुछ बुदबुदा रहा था। अवश्य ही हॉर्न की आवाज से चौंक कर उसके हाथ से कपड़े नीचे गिर गये होंगे।

"मामाजी... खाना..." संजू ने आवाज लगाई।

सुनते ही मामाजी मुड़े, ठन से कार के जिस्म को नाखून से ठोकते हुये दूसरा हाथ हवा में फतह के झंडे की तरह उठा कर बोले, "ठीक हो गया।" उनके काले ग्रीस के धब्बों में सुसज्जित गोरे मुख पर सफलता की स्मित बिखर गई, पुष्ट कंधे घमण्ड से और सीधे हो गये व प्रसन्नता से उनकी सुडौल कद काठी और भी अधिक प्रतिष्ठित दिख रही थी।

गौरव समझ गया कि मामाजी इस समय विजयोल्लास के आनन्द में विभोर हैं। उसने याद दिलाया, "अम्मा बुला रही हैं।"

"उंह! सुनो तो, जीजी भी यहीं दौड़ी आयेंगी," हाथ झटकाते हुये मामाजी ने गौरव की बात काट दी। वह ऐसे बेताब दिख रहे थे जैसे कोई संगीतज्ञ एक नया मुखड़ा सुनाने के लिये बेकल हो।

सहमे हुये गौरव और संजू उनकी ओर बढ़े। ज्यों ही मामाजी ने अपना हाथ खुले बोनट में हॉर्न के तार की ओर बढ़ाया, दोनों ने कानों को हथेलियों से ढक लिया। अ फां फां पां पां की घोषणा हुई। इस बार गौरव और संजू सतर्क थे, पर लूसी दुम दबा कूं-कूं करती हुई भाग गई। गली में कुछ पट खुले, कुछ बिगड़े हुये मुंह दिखाई दिये और जैसे कि मामाजी ने भविष्यवाणी की थी, अम्मा बाहर आ गईं।

"वाह, मामाजी वाह, क्या हॉर्न है," संजू ने दमदार तारीफ की। मामाजी का चेहरा और भी खिल उठा। उत्तेजित हो बोले, "अभी अन्दर से हॉर्न बजाकर फिर से सुनाता हूं।"

"न, न, न, न, मामाजी," गौरव ने लपक कर उन्हें रोका, "कहीं कोई सुनकर नकल न कर ले। यह तो सारी दुनिया में बस एक ही है।"

मामाजी गदगद हो गये पर अम्मा के एक ही वाक्य ने 'खाना ठंडा हो रहा है,' सबको चुप करा दिया। चुपचाप तीनों अम्मा के पीछे-पीछे भीतर चल दिये।

अभी मामाजी ने निवाला मुंह की ओर बढ़ाया ही था कि अम्मा ने पूछा, "ये क्या सारा दिन इस खटारे से उलझा रहता है, पापा के पास दूसरी कार भी तो है, क्यों सुरु?"

"अं हूं। जीजी जायका खराब कर दिया नाम लेकर। और यह खटारा नहीं मेरी 'पारो' है, बता दिया हां।" मामाजी ने रूठने की कोशिश की। अम्मा पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

"क्यों तुम्हारा नाम भी बदल गया। मैं तो सुरु ही पुकारूंगी," अम्मा ने दृढ़ता से कहा।

मामाजी ने मुंह बिगाड़कर कहा, "फिर वही जीजी, स्यूरेन बुलाओ... इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ता प्रगतिशील नाम, या फिर अपने समय के हिसाब से सुरेन ही कहो। ऐसा लगता है कि शरतचन्द्र के उपन्यास में से निकलकर सीधा चला आ रहा है। मेरे सभी मित्र स्यूरेन बुलाते हैं। कोई नाम हुआ सु... जो कि तुम कहती हो।"

मामाजी का पूरा नाम था सुरेन्द्रनाथ सहाय उर्फ 'दौलत-ए-टनकपुर'। सिर्फ नानाजी और अम्मा उन्हें सुरु कहकर पुकारते थे जो उन्हें जरा नहीं भाता था। शायद इस तखल्लुस या उपनाम का नाना जी को पता भी नहीं था। एक बार धीरे से गौरव और संजू को उन्होंने बताया था। उपनाम इसलिए रख छोड़ा है कि यदि कल कविता लिखने का शौक चर्राया तो उपनाम ढूंढ़ने का कष्ट नहीं करना पड़ेगा। "लेकिन मामाजी, यह उपनाम तो किसी मकान या दुकान का नाम लगता है," संजू ने आपत्ति की थी जिसका मामाजी ने जोरदार ढंग से खंडन किया था। "अरे, 'बेकल जौनपुरी' वगैरह भी कोई तखल्लुस होते हैं। मानों चक्करदार टुकड़ा तिहाई पूरी कर सम पर थम गया हो। दौलत-ए-टनकपुर में विविधता है, दम-खम है, और धन की खनखनाहट भी है।"

अभी गौरव यह सब बातें याद कर ही रहा था कि मामाजी के सुझाव ने उसे वापस धरती पर ला पटका।

"जीजी, आज पारो की आवाज लौट आने की खुशी में मैं इन दोनों को आइसक्रीम खिलाने मोती झील ले जाऊंगा," मामाजी कह रहे थे।

अम्मा ने सिर हिलाकर आज्ञा दे दी। आइसक्रीम के नाम से ही संजू की आंखों में चमक आ गई लेकिन मामाजी के सुझाव पर उसे हंसी आई। "पारो तो तरह-तरह की आवाजों का पुलिंदा है। बस, हॉर्न ही तो नहीं बोलता था।" तुरन्त गौरव ने टांग से ठोकर लगाकर अपने भाई को चुप करा दिया। मामाजी पारो के लिए कुछ नहीं सुन सकते थे। जो भी हो मामाजी के साथ बड़ा मजा रहता है। वे खाते-पीते हैं, मस्ती करते हैं और हम उनके चुटकुलों से खाना हजम करते हैं। उनके साथ गौरव और संजू अपने और उनके बीच की उम्र की दूरी भूल जाते हैं। वैसे भी अभी वह 35 वर्ष के ही तो हैं।

खाना खाकर दोनों ने जूते-मोजे पहने और जाने को तैयार हो गये। मामाजी कपड़े बदल कर पारो के सहारे खड़े उनका इन्तजार कर रहे थे। सर्दियों की धूप में भी ठंडक थी पर आइसक्रीम के लिये क्या गर्मी क्या सर्दी। कुछ अटकते, कुछ झटकते हुए मॉरिस माइनर 1948 का मॉडल यानी पारो खांसती-खंखारती हुई आगे बढ़ी।

कुछ ही दूर गये होंगे कि देखा बड़े चौराहे पर एक मनचला सीटी बजाता हुआ साइकिल चला रहा है। सारी दीन-दुनिया से बेखबर ऐसे मस्ती में चला जा रहा था जैसे आगे-पीछे कोई ट्रैफिक ही न हो।

"यह तो हैड-फोन लगाये वॉकमैन पर संगीत सुन रहा है," संजू ने बताया।

"तभी तो," गौरव हंसी रोकते हुए संजू के कान में फुसफुसाया, "इसे पारो के आने का पता भी न चला।" संजू ने भी मुंह पर हाथ रख लिया।

लेकिन मामाजी निश्चिंत थे। उन्होंने हॉर्न दबाया, कोई स्वर नहीं उभरा। मामाजी ने आश्चर्य से हॉर्न की ओर देखा जैसे कुछ अनहोनी हो गई हो। उन्होंने फिर हॉर्न को ठोका, एक बार, दो बार,—कोई स्वर नहीं फूटा। मामाजी विचलित हो उठे। बार-बार हॉर्न दबा रहे थे। उधर पारो साइकिल वाले के समीप पहुंचती जा रही थी। साइकिल वाले को कुछ खबर न थी। दोनों की दूरी कम होती जा रही थी। घबराकर गौरव चिल्लाया, "मामाजी..."

मामाजी ने एक झटके के साथ गाड़ी घुमाई और सर्र से साइकिल वाले को बचाते हुए निकल गये। उधर साइकिल वाला इस आकस्मिक सरसराहट से डगमगा गया। साइकिल लहराती हुई कच्ची सड़क पर उतरी और वह मनचला गद्दी से उछलकर नीचे धराशायी हो गया। दांत पीस भन्ना कर चिल्लाया, "हॉर्न नहीं है क्या?"

साइकिल वाले का कटाक्ष सुनकर मामाजी अपनी सीट में कुछ ऐसे सिमट गये जैसे अपनी ही हीनता से दुबकना चाह रहे हों। एकाएक दृढ़ होकर वह उचके, पारो की गति बढ़ा सर्र से बायीं दिशा में सिविल लाइन की ओर घूम गये। यहां कमिश्नर आदि के दफ्तर होने की वजह से सदा सन्नाटा रहता था। अभी थोड़ी ही दूर गये थे कि अचानक अ फां फां पा पां का कर्णभेदी स्वर सन्नाटे को तोड़-मरोड़ गया। मामाजी की आंखें चमकने लगीं। "देखो बोला..." मामाजी अभी ठीक से प्रसन्नता जता भी न पाये थे और गौरव एवं संजू हॉर्न की आवाज से संभल भी न पाये थे कि तीखी सीटी ने उनको चौंका दिया।

कार रोक कर देखा। पीछे एक पुलिसवाला गुस्से में दौड़ा आ रहा था। "किसके लिए हॉर्न बजा रहे हो? जानते नहीं यह 'नो हॉर्न जोन' है," वह दहाड़ा।

गौरव ने गर्दन घुमाकर देखा तो सड़क के दांई ओर हॉर्न नहीं बजाने का संकेत चिह्न बना हुआ दिखाई दिया। तुरन्त उसने कोहनी मारकर मामाजी को सावधान कर दिया कि उससे बहस न करें। बड़ी विनम्रता से मामाजी ने गलती स्वीकार की और इस मुसीबत से छुटकारा पाकर आगे बढ़े। "मामाजी, लगता है आपका हॉर्न बड़ा नटखट है," संजू बोला।

"नहीं, नहीं, मनचला हो गया है। आदेश ही नहीं मानता, मनमानी करता है," गौरव ने संजू की बात में और मिर्च-मसाला लगाकर कहा।

"हटो, मेरी पारो मजाक कर रही थी," मामाजी ने कार को सहलाते हुये कहा।

"अच्छा मजाक था। अभी लेने के देने पड़ जाते," गौरव ने क्रोध व्यक्त करते हुए कहा।

"घबराओ मत!" कह कर मामाजी ने तसल्ली दी और बड़ी कुशलता से आगे बढ़े।

मोती झील पर आज काफी भीड़ थी। खोमचे वालों और गुब्बारे वालों का जमघट था और टिकिया वाले पर तो जैसे लोग टूट रहे थे। अचानक एक अधेड़ महिला सड़क के बीचोंबीच खड़ी होकर अपनी लड़की को पुकारने लगी। "आ जा, जल्दी चल प्रमिला।"

"अरे, घर का आंगन समझ रखा है," मामाजी भुनभुनाये। ब्रेक लगाकर हॉर्न दबाया। कोई आवाज नहीं हुई। बुढ़िया से हट अब मामाजी का सारा ध्यान हॉर्न पर अटक गया। आश्चर्यचकित मामाजी हॉर्न को निहार रहे थे।

गौरव ने संजू को कोहनी मारी और होंठ दबाकर मुस्कराया। तभी "नागपुर के सन्तरे, बड़े, मीठे सन्तरे," चिल्लाता एक ठेलेवाला उधर से आया। महिला के पास बड़ी उम्मीद से वह रुका, शायद कुछ सौदा बिक जाये। एकाएक अ फां फां पां पां की गगनभेदी आवाज उस शोर-शराबे में तहलका मचा गई। ठेलेवाला हड़बड़ा कर उछला और महिला से जा टकराया। दोनों अपने को संभाल न पाये और गिर पड़े। उधर ठेला पलट गया, सारे नागपुर के सन्तरे लुढ़कते हुए दूर-दूर तक फैल गये।

"हाय-हाय सत्यानास हो तेरा, सारे जोड़ ढीले कर दिये। हाय! मुझी से भिड़ना था। हाय," महिला बिना रुके एक ही स्वर में विलाप करती जा रही थी। गौरव और संजू ने दौड़कर बुढ़िया को संभाला। मामाजी भी निकल आये।

अपने को संभालते हुए ठेलेवाला बोला, "अम्मा मैं कोई जानबूझ कर थोड़े ही टकराया था। यह तो, यह तो," गर्दन घुमाकर वह मामाजी की ओर देखने लगा। "अबे, खड़ी गाड़ी में ऐसे हॉर्न बजा रहा था जैसे स्टेज पर हारमोनियम बजा रहा हो। सारा माल बिखेर दिया," ठेलेवाले ने झल्लाकर कहा।

मामाजी से कुछ कहते न बना। निष्कपट भाव से वह गिरे हुये सन्तरों को स्तब्ध से देखते रहे। झुककर उठाने लगे तो ठेलेवाला गरजा, "रहने

दो बाबूजी, ऐसा हॉर्न लिये फिरते हो जैसे..." "इन्द्र का नगाड़ा।" किसी और ने ठेलेवाले की बात पूरी की। देखते ही देखते वहां भीड़ जमा होने लगी। कोई कहता 'कान फोड़ भोंपू' और कोई कहता 'हड़प्पा की खुदाई में मिला फूटा हुआ बाजा'। हॉर्न के लिये एक से बढ़कर एक विशेषण जमा होते गये।

गौरव हॉर्न की बढ़ती लोकप्रियता से डर गया। चुपके से मामाजी का हाथ दबाकर बोला, "खैर चाहते हैं तो चुपचाप जल्दी से खिसक चलो।" मामाजी को सुझाव पसन्द आया। किसी तरह जान बचाकर, बिना आइसक्रीम खाये तीनों घर लौट आये।

रास्ते भर मामाजी को हॉर्न की शरारत परेशान करती रही। बहुत देर तक कार का बोनट खोले हॉर्न से जूझते रहे, पर हॉर्न ने चूं तक न की। संध्या के अंधकार ने उन्हें अपने निश्चय को दूसरे दिन तक स्थगित करने के लिए विवश कर दिया। वह आधी रात से पहले ही सो गये। गौरव और संजू की आंखों में नींद नहीं थी। एक तो रोज देर तक मामाजी से गप्पें लड़ाने की आदत थी और फिर उपन्यास ने भी मजेदार मोड़ ले लिया था।

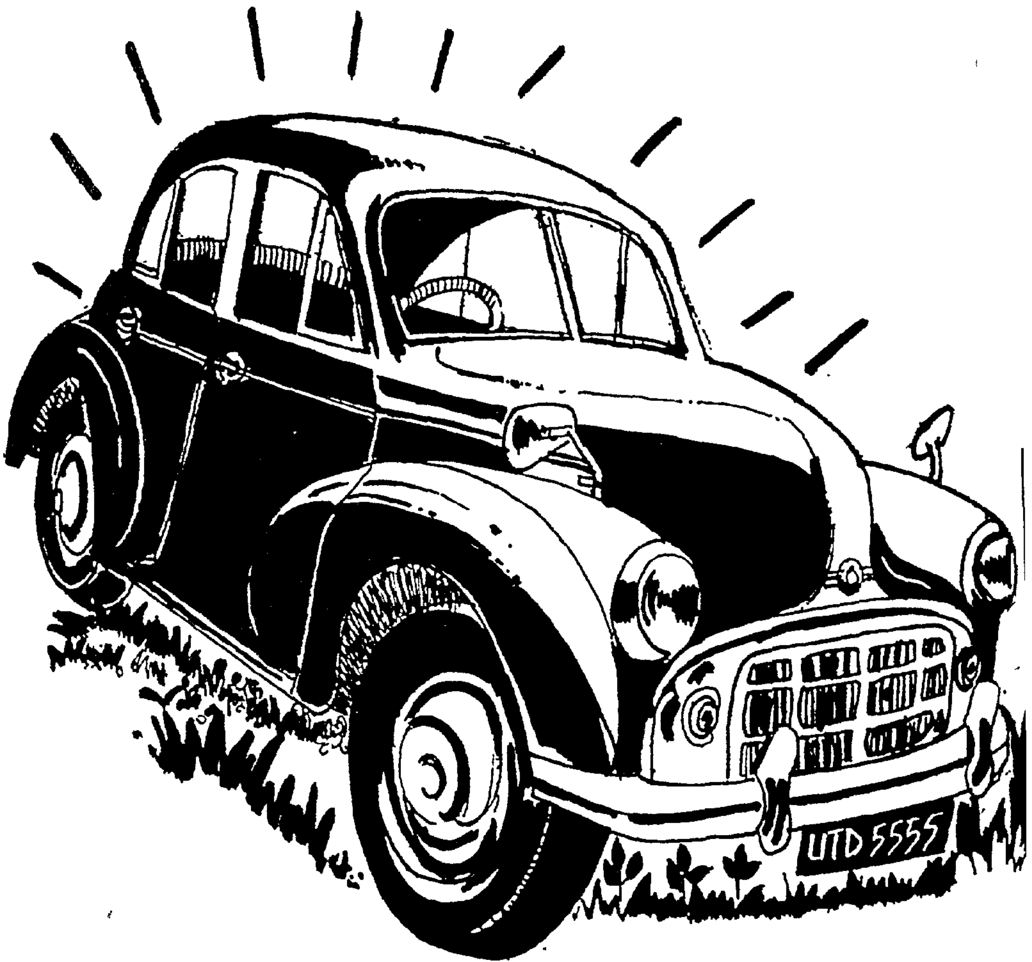
सर्दियों की रात में सन्नाटा और भी गहन हो जाता है। पत्ता तक नहीं हिल रहा था। अचानक—अ फां फां फां पां पां... के लगातार निकलते स्वर ने अंधकार और सन्नाटे को भंग कर दिया। हॉर्न जो बजना शुरू हुआ तो उसकी कड़कड़ाती आवाज थमने में ही नहीं आ रही थी। गौरव ने खिड़की से झांका। बारी-बारी से मकानों की बत्तियां जलने लगीं। फां फां पां, हॉर्न बजे जा रहा था कि 'खनन् खनन्, खन खन' उस शोर में एक और स्वर उभरा। गौरव और संजू भाग कर छत पर आ गये। देखा नीचे बर्तन बिखरे पड़े थे। तभी 'धम्म, धम्म!' कोई सामने वाले मकान की पहली मंजिल से गिरा। "हाय," वह चिल्लाया। चौकीदार की सीटी बजी और खटाक से डंडा पटक उसने उस व्यक्ति को दबोच लिया।

सारी गली में उजियारा हो गया था। गौरव और संजू प्रसन्न थे। मामाजी भी निकल आये। आखिर हॉर्न ने कुछ तो किया। "चोर पकड़ा गया," सब एक-दूसरे को बता रहे थे। "कैसे?" मामाजी ने पूछा।

"और कैसे मामाजी, यह हॉर्न का कमाल है। उसे सुन चोर चौंक कर गिर पड़ा," गौरव ने हंसकर कहा। उस मद्धिम रोशनी में भी मामाजी के चेहरे पर दमकता तेज नजर आ रहा था।

हॉर्न अभी भी बजे जा रहा था। तभी नीचे से अम्मा ने जोर से डपट कर कहा, "अरे हॉर्न तो बन्द करो।"

"बजने दीजिये, बहन जी," सामने वाले घर की बॉलकनी से मिसेज



मिश्रा का मिश्री घुला स्वर आया। "इसी के कारण तो मेरे वर्तन बच गये वरना आज रसोई खाली हो गई होती।"

मामाजी की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा। क्षणभर को रुके, शायद मिसेज मिश्रा की तारीफ का धन्यवाद करने, फिर नीचे अम्मा को देख पारो की दहाड़ वन्द करने में लग गये।





# तीरन्दाजी का कमाल

इस बार मामाजी अपने साथ एक धनुष, तरकश और कुछ पुराने जंग लगे तीखी नोकवाले तीरों का गुच्छा लाये। नानाजी के पिताजी यानी अम्मा के बाबा को तीरन्दाजी का शौक था। अम्मा ने बताया कि बहुत अरसे से ये तीर नानाजी के मकान की पुराने सामान की कोठरी में पड़े हुए थे। मामाजी ने खानदानी शौक को फिर से जगाने की अपनी इच्छा प्रकट की और अकड़ कर बोले, "सही मायनों में राजसी ठाट-बाट ऐसे शौक से ही तो पता चलते हैं और फिर तीरन्दाजी हमारी संस्कृति का प्रतीक है। कितने लोग हैं आजकल जो तीरन्दाजी जानते हैं।"

मामाजी का निश्चय सुनकर गौरव और संजू, दोनों घबरा गये।

तीर, रॉकेट की गति को देखकर ही सीधा वीरगति को प्राप्त हो जायेगा।" संजू ने तुक मिलाते हुए मामाजी का ध्यान तीरों से हटाने की कोशिश की। वह गर्दन और हाथ हिलाते हुए बोला, "नहीं मामाजी, यह तो कुछ भी नहीं है। कोई और शौक पालिये।"

बात सुनकर मामाजी एक लय से बराबर गर्दन हिलाते रहे। फिर मुस्कराकर वोले, "तुम नहीं जानते तीरन्दाजी एक कला है।"

"कलाकार बनना चाहते हैं तो तबला-वादन सीखिये या झांझ, मंजीरे, वोंगा..." संजू कह रहा था कि तभी मामाजी ने मेज ठोक कर उसको चुप कराया। चिंतित होकर वोले, "सभी के लिये गुरु चाहिये। गुरु ही तो नहीं मिलता, उसी की तो तलाश में भटक रहा हूं।"

"आप भटकते ही रहें, यह मेरी दिली तमन्ना है," संजू ने नाराज होते हुए कहा।

"क्यों भई, क्यों भानजे? ऐसी क्या नाराजगी है," उन्होंने पूछा।

"मैं इतनी देर से कह रहा हूं बाजार जाना है मैगजीन लेने। आप हैं कि बातों में उलझे हैं," गौरव संजू की ओर से बोला।

"अच्छा, अच्छा अभी आये," कह कर मामाजी गुसलखाने में बंद हो गये।

उनके जाते ही गौरव हाथ जोड़ते हुए संजू से बोला, "प्यारे कुछ करो। ये नया भूत मामाजी के सिर पर सवार हो गया है। किसी मुसीबत के आगमन की घंटियां बज रही हैं।"

"घबराओ मत, गुलाम की दुकान पर जा रहे हैं। एक नम्बर का गपोड़ी है। मामाजी एक बार उसकी बातों में उलझ गये तो सारा शौक काफूर हो जायेगा। बस फिर बातों का भूत ही सिर पर जम जाएगा," संजू ने कहा।

गौरव को बात जंच गई। "हां, ठीक है। हम वहीं देर तक रुके रहेंगे," वह बोला। दोनों सावधान होकर एक पंक्ति में खड़े हो गये जैसे मामाजी को सलामी देने की प्रतीक्षा मे हों।

तीनों पास ही के बाजार में गुलुकमनकीर लेंतूडगलताहूर दुकान की ओर चल दिये। गुलाम की दुकान दूर-दूर तक मशहूर थी। बहुत लोग तो

## तीरन्दाजी का कमाल

इस बार मामाजी अपने साथ एक धनुष, तरकश और कुछ पुराने जंग लगे तीखी नोकवाले तीरों का गुच्छा लाये। नानाजी के पिताजी यानी अम्मा के बाबा को तीरन्दाजी का शौक था। अम्मा ने बताया कि बहुत अरसे से ये तीर नानाजी के मकान की पुराने सामान की कोठरी में पड़े हुए थे। मामाजी ने खानदानी शौक को फिर से जगाने की अपनी इच्छा प्रकट की और अकड़ कर बोले, "सही मायनों में राजसी ठाट-बाट ऐसे शौक से ही तो पता चलते हैं और फिर तीरन्दाजी हमारी संस्कृति का प्रतीक है। कितने लोग हैं आजकल जो तीरन्दाजी जानते हैं।"

मामाजी का निश्चय सुनकर गौरव और संजू, दोनों घबरा गये। मामाजी का हर शौक सामान्यतः की हद पार करके एक जनून की तरह उनके सर पर सवार होता और कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देता। दोनों ने आंखों ही आंखों में एक-दूसरे को अपने दिल की बात समझा दी। मामाजी के सिर से तीरन्दाजी का भूत उतारना ही होगा।

"अरे छोड़िये भी मामाजी, तीरन्दाजी पुरानी चीज है। आजकल तो पिस्तौल, राइफल वगैरह चलती हैं। जरा-सी ठांय की आवाज से ही आपका तीर रास्ता भूल आगे जाने की जगह डर कर वापस आ जायेगा," गौरव ने उन्हें डराते हुए कहा।

"मामाजी कहां ये स्पेस-एज की विद्युती रफ्तार, कहां मामूली-सा

ला।" आदेश देकर गुलाम ने भीड़ को नमस्कार किया। इसके साथ ही भीड़ तित्तर-बित्तर हो गई। मामाजी ने गुलाम के कान में न जाने क्या मंत्र फूंका कि वह अपनी लुंगी संभाल चलने को तैयार बहादुरों को हिदायतें देने लगा।

"ये क्या कर रहे हैं मामाजी, गुलाम कोई तीरन्दाज नहीं है, एक नम्बर का नौटंकीबाज है," गौरव ने मामाजी को धीरे से समझाया। वह कुछ न बोले, उनकी मन्द-मन्द मुस्कान ने समझा दिया कि उन्हें परम आनन्द प्राप्त हो गया है।

"ऐसे ही नहीं है, हम कयामत की नजर रखते हैं। भवों के तिरछेपन से कमान की पकड़ का अन्दाजा लगा लेते हैं। अब तो यही हमारा गुरु बनेगा," वह बोले।

कुछ भी कहना चुनाव प्रचार के लाउडस्पीकर के आठों भोंपू बजाने के समान था। वह गुलाम को लेकर तुरन्त घर की ओर रवाना हो गये। घर पहुंच, साज-समान, तीर कमान लेकर तुरन्त छत पर पहुंच अपनी शिक्षा की पूरी तैयारी कर ली। गौरव और संजू ऊपर पहुंचे तो देखा, शुद्ध गुरु-शिष्य की परम्परा में मामाजी एकलव्य बने, शीश झुकाये घुटनों के बल हाथ जोड़े नमन कर रहे हैं, और गुलाम द्रोण बने एक फिल्मी ऋषि की शाप देने वाली मुद्रा बनाये हैं। मुश्किल से गौरव ने अपनी हंसी दबाई।

पहले तो गुलाम ने एक जौहरी की तरह जंग लगे तीरों में से बिलकुल बेकार तीर छांट-छांट कर फेंके। कुल तीन तीर तरकश में रख अपनी तरकश बांधी। बड़ी देर तक कमान की पकड़ प्रत्यंचा के तनाव और फुटवर्क यानी प्रत्येक कोण में पैर जमाने के तरीके समझाते रहे। बार-बार प्रत्यंचा को खींच कर ऐसे झनझनाते, कि हर बार ऐसा लगता कि डोर अब टूटी, अब टूटी। कभी बायें, कभी दायें चक्कर काट चटाक की आवाज के साथ पैर ऐसे जमता जैसे कोई कत्थक का टुकड़ा पूरा कर सम पर आकर रुका हो। थ्योरी पूरी हुई तो निशाने की तलाश हुई। गुलाम ने झट कोयला उठाकर दीवार पर एक बड़ा-सा गोल घेरा खींच दिया।

"अब देखिये," गुलाम ने हुंकार भरी, "ता थेई-थेई-थेई-ततता"

गुलाम के किस्से सुनने ही आते थे। हरेक की पसन्द की किताब या मैगजीन जरूर मिल जाएगी, यह गुलाम का दावा था। हर समय भीड़ लगी रहती थी और दुकान संभालते थे दो पहाड़ी बहादुर। गुलाम तो महज जन-सम्पर्क बनाने में विश्वास करता था।

दुकान के बाहर ही गुलाम अपना आसन जमाये ज्ञानी-ध्यानी सन्यासी के समान अपने दिव्य करतल नाद से अपने व्याकुल भक्तों को सम्मोहित किये बैठे थे। रोज की तरह आज भी वहां मजमा लगा हुआ था। तीनों पहले प्रजा में शामिल हुए। बदकिस्मती से गुलाम आज अपनी तीरन्दाजी के कारनामे बयान कर रहे थे या यूं कहिये बेपर की उड़ा रहे थे।

गौरव और संजू ने वहीं माथा पीट लिया। मामाजी मंत्रमुग्ध से गुलाम के नजदीक खिसक गये मानों मनोकामना पूरी हुई, जैसे विविध भारती पर मनपसन्द गीत आ गया हो।

''गये काम से,'' गौरव फुसफुसाया।

''लगता है आज सूर्य देवता ही तीर कमान लेकर निकले हैं, सारे दिन तीर चलायेंगे। जहां जाओ, वहीं तीर कमान की चर्चा है, क्या किया जाए,'' संजू ने संजीदगी से कहा।

मामाजी हाथ जोड़े, भगवद भजन का आनन्द लेते भक्त के समान मुग्धभाव से खड़े थे। उधर गुलाम श्रोताओं के बढ़ते उत्साह से उत्तेजित हो किस्से गढ़ता जा रहा था—''बात सन् सैंतीस की है। गये थे शेर के शिकार को मिल गया हिरण। अब गोरा साहब तो लगे अपनी तोप फिट करने, लेकिन हमें सब्र कहां। तीर कमान से छूट चुका था।'' और किस्सा बढ़ता रहा, तीर दौड़ता रहा, आखिर तीर और हिरण की रेस जैसे ही खतम हुई कि मामाजी ने आनन्दित हो साष्टांग प्रणाम किया। ''गुरु कहां थे अब तक। अरे, मैं, कुमति, नादान, द्रोण को नहीं पहचान पाया। दीक्षा... दीक्षाम् देही...'' वह हाथ जोड़कर बोले।

जाने गुलाम को क्या सूझी, ड्रामे का सिलसिला जारी रखते हुए बोला, ''तथास्तु। मैं प्राचीन द्रोणाचार्य नहीं। लेकिन तुझे दीक्षा अवश्य दूंगा। अरे, साहसी, वीर, बहादुर—कहां है, ला बे जल्दी से एक नारियल तो

उठते-बैठते काल्पनिक तीर कमान से ही निशाना साधते रहते।

दोनों भाई सन्तुष्ट थे कि मामाजी का तीरन्दाजी का अभ्यास सिर्फ हवाई होकर ही रह गया है। इसमें कोई डर की बात नहीं थी। कम से कम किसी को खतरा तो नहीं था। दूसरे दिन जब वे स्कूल से लौटे तो मामाजी को नीचे न पाकर दौड़े-दौड़े ऊपर पहुंचे।

मामाजी तीर कमान लिये निशाना साध रहे थे। कभी-कभी दाईं आंख बन्द करके देख लेते थे।

"अरे, मामाजी कहां निशाना लगा रहे हैं?" संजू ने पूछा

"शश...श...," मामाजी ने चुप रहने का इशारा किया।

"क्या शिकार उड़ जाएगा?" गौरव ने जानना चाहा।

"अं...ह... ध्यान बंटता है," उन्होंने मुंह बिगाड़कर कहा।

"पर निशाना कहां लगा रहे हैं?" संजू ने पूछा।

"बताइये न...," गौरव ने मचलकर कहा।

"वह सामने इमली का पेड़ देख रहे हो... वहां... बस उस इमली पर," वह बोले।

ठीक सामने गुप्ता अंकल के घर के बाहर इमली का पेड़ था। पेड़ पर इमलियों की बहार आई हुई थी। न जाने किस इमली को निशाना बना रहे थे, मामाजी। इससे पहले कि गौरव कुछ पूछता, मामाजी ने अपनी दिशा का बखान करना शुरू किया।

"बस वही इमली नजर आ रही है...", वह कह रहे थे।

"सो तो मुझे भी दिख रही हैं, ढेर सारी..." गौरव ने टोका, पर मामाजी ने सुना नहीं। वह कहते जा रहे थे।

"आसपास शून्य, सिर्फ निशाना ही आंखों में है..."

"ठीक अर्जुन की तरह...," संजू बीच में टपका।

"हां," सीधे होकर मामाजी ने तीरन्दाजी का पोज बनाया।

तभी घोड़े की टापों की आवाज सुनाई दी। गौरव ने झांक कर देखा, गली में एक तांगा आया और इमली के पेड़ के नीचे आकर रुक गया। गुप्ता अंकल के घर मेहमान आये थे। "चाचाजी आ गये, चाचाजी आ

करके घूम-घूम कर एक-दो-तीन जल्दी-जल्दी तीनों तीर दाग दिये। एक उत्तर में गिरा, दूसरा गमलों के पीछे गिरा और तीसरा ठीक घेरे के दक्षिण में लगा। एक भी निशाने पर नहीं लगा। गौरव जोर से हंसने वाला ही था पर मामाजी को इस कद्र प्रभावित देख संजू की ओट में हंसने लगा। संजू ने भी मुंह पर हाथ रखकर हंसी रोकी। उधर गुलाम ने तरकश उतार कर मामाजी को थमाया। "घेरा कुछ टेढ़ा बना है," वह बोला और घेरे की गोलाई को कोयले से गहरा कर दिया। मामाजी ने भी हां में हां मिलायी।

अब मामाजी की तैयारी आरम्भ हुई। गुलाम उन्हें ऐसे सजा रहा था जैसे वह सीधे रामलीला के मंच पर जा रहे हों। सज-सजाकर मामाजी ने कमान साधा। एक बारगी सिर्फ फुटवर्क करके तीर चलाने का अभिनय करके दिखाया। प्रसन्न हो गुलाम ने जोर से कहा, "शाबाश!" अब तैयार हो जाओ... हां... ऐसे... दायां पैर आगे, थोड़ा घुटना मोड़ो..." वह निर्देश दे रहा था और मामाजी वैसे ही करते जा रहे थे। "रेडी", गुलाम ने पूछा। "रेडी", मामाजी ने उत्तर दिया और कमान ऊंची करके तीर साधा। तभी गुलाम ने टोका, "तनिक घूम के।"

आज्ञाकारी शिष्य की भांति मामाजी गुलाम की ओर घूम गये। बाण तो छूटने को तैयार ही था। "ता थेई-थेई-थेई-तत्ता" करके चक्कर काटे और तीर चलाते गये, एक-दो-तीन। सारे निशाने पर बैठे, एक गुलाम की बांह पर, वह मुड़ा तो दूसरा बायें पुट्ठे पर और तीसरा सर्र से नाक के सामने से हवाई जहाज की तरह उड़ता हुआ चला गया।

"हाय मार डाला," गुलाम ने आह भर कर कहा, फिर बिगड़कर त्योरियां चढ़ा, पैर फटकारते हुये जाने लगा, "लाहौल विला कूवत मियां, आप तो शागिर्द बन रहे थे। हमें मालूम न था ऐसी शागिर्दी में लेने के देने पड़ जायेंगे। जाइये, जाइये किसी और को निशाना बनाइये।"

"गुरु, आप तो यूं ही खफा हो गये," मामाजी ने वियोगी नायक की भांति विलाप किया। किन्तु गुलाम कहां रुकने वाला था, उसने तो मुड़कर भी न देखा। लेकिन चाहे जो कुछ भी हो गुलाम ऐसी लौ लगा गया कि सोते-जागते मामाजी तीर-तरकश की बात करते और चलते-फिरते,

उठते-बैठते काल्पनिक तीर कमान से ही निशाना साधते रहते।

दोनों भाई सन्तुष्ट थे कि मामाजी का तीरन्दाजी का अभ्यास सिर्फ हवाई होकर ही रह गया है। इसमें कोई डर की बात नहीं थी। कम से कम किसी को खतरा तो नहीं था। दूसरे दिन जब वे स्कूल से लौटे तो मामाजी को नीचे न पाकर दौड़े-दौड़े ऊपर पहुंचे।

मामाजी तीर कमान लिये निशाना साध रहे थे। कभी-कभी दाईं आंख बन्द करके देख लेते थे।

"अरे, मामाजी कहां निशाना लगा रहे हैं?" संजू ने पूछा

"शश...श...," मामाजी ने चुप रहने का इशारा किया।

"क्या शिकार उड़ जाएगा?" गौरव ने जानना चाहा।

"अं...ह... ध्यान बंटता है," उन्होंने मुंह बिगाड़कर कहा।

"पर निशाना कहां लगा रहे हैं?" संजू ने पूछा।

"बताइये न...," गौरव ने मचलकर कहा।

"वह सामने इमली का पेड़ देख रहे हो... वहां... बस उस इमली पर," वह बोले।

ठीक सामने गुप्ता अंकल के घर के बाहर इमली का पेड़ था। पेड़ पर इमलियों की बहार आई हुई थी। न जाने किस इमली को निशाना बना रहे थे, मामाजी। इससे पहले कि गौरव कुछ पूछता, मामाजी ने अपनी दिशा का बखान करना शुरू किया।

"बस वही इमली नजर आ रही है...", वह कह रहे थे।

"सो तो मुझे भी दिख रही हैं, ढेर सारी..." गौरव ने टोका, पर मामाजी ने सुना नहीं। वह कहते जा रहे थे।

"आसपास शून्य, सिर्फ निशाना ही आंखों में है..."

"ठीक अर्जुन की तरह...," संजू बीच में टपका।

"हां," सीधे होकर मामाजी ने तीरन्दाजी का पोज़ बनाया।

तभी घोड़े की टापों की आवाज सुनाई दी। गौरव ने झांक कर देखा. गली में एक तांगा आया और इमली के पेड़ के नीचे आकर रुक गये. गुप्ता अंकल के घर मेहमान आये थे। "चाचाजी आ गये, चाचाजी

गये,'' बच्चों का शोर हुआ। जोर-जोर से अगवानी की रस्में होने लगी।

किन्तु इस शोर से मामाजी किंचित भी विचलित न हुये। अर्जुन के समान कमान कसे इमली पर दृष्टि रखे बाण छोड़ने को तैयार थे। ''थेई-थेई-तत्-तत्ता,'' की ताल पर मामाजी ने एक के बाद एक बिजली की गति से तीर छोड़े। एक घोड़े के कान के पास से सरसराता निकल गया। एक आगे के खुर के पास जा अटका और तीसरा घोड़े को लांघता हुआ ठीक पीछे की टांग के बराबर में गड़ गया। घोड़ा जोर से हिनहिनाया, अगला खुर हवा में उठा सरपट भागा। सभी को मानों बिजली का जोरदार झटका लगा।

''अरे सामान, सामान...,'' मेहमान चिल्लाये।

''मेरा तांगा, अरी बसन्ती ठहर, बसन्ती...'', तांगेवाला चीत्कार करता हुआ पीछे-पीछे भागा। उसके पीछे दौड़े गुप्ताजी के बच्चों के चाचाजी, उनके पीछे बच्चों की पलटन। चूंकि गली के अंत में सड़क खतम हो रही थी इसलिए बेचारी बसन्ती चाहते हुए भी आगे न जा सकी। उसे रुकना पड़ा। अब वह भयभीत हो बड़ी बेचैनी से तांगे में बंधी हिनहिना रही थी। मामाजी को समझने में कुछ देर लगी। पलक झपकते ही सारा हंगामा हो गया था। तांगेवाले ने पुचकार कर बसन्ती को शांत किया। वह तांगा ठेलता हुआ डरी सहमी बसन्ती को वापस लाया। तभी उसकी नजर नीचे पड़े तीरों पर पड़ी।

फिर क्या था, वह आगबबूला हो गया। ''हमार बसन्ती का खून किया चाह रहे। कोनो लाज सरम है कि नाहीं। मुला, अच्छी सवारी लाये मुहल्ला मा। बसन्ती से कौन का बैर...'' इधर-उधर देखते हुए उसकी नजर धनुषधारी मामाजी पर पड़ी। गौरव और संजू ने मामाजी को पीछे खींचने की बड़ी चेष्टा की किन्तु वह टस से मस नहीं हुये। अचम्भित से मूक श्रोता की भांति वह देख रहे थे। जैसे उन्हें यकीन ही न आ रहा हो कि यह गलत निशाना उन्हीं का हो सकता है।

''ऊ रहा... ऊ धनुष लिए...,'' वह चिल्लाया।

''अरे भाई, मैं तो इमली पर निशाना लगा रहा था,'' मामाजी बोले।

"का हमार वसन्ती तोका इमली नजर आत है, तोहार दीदे हैं कि वैंगन का वीजा। अरे ऊपर से का ताकत हो, तनिक नीचे आवा युधिष्ठर के भैया, एक ढीले हाथ का तनिक घुमाई के... हां... सारी निशानेबाजी विसुर देही... आआ ववुआ...नहीं तो हमऊ..." तांगेवाला गुस्से में बिना कुछ सोचे वके जा रहा था।

वह तो श्रीमती गुप्ता ने वीच-वचाव किया वरना तो तांगेवाला चावुक संभाले, सीना ताने साक्षात् भीम के समान वढ़ा आ रहा था।

"मामाजी, अव तो छोड़ दीजिए तीर कमान," गौरव ने समझाया।

"हां, आज दूसरे हादसे से वाल-वाल वच गये..." संजू ने याद दिलाया किन्तु मामाजी ने सुनी-अनसुनी कर दी। उनकी नजरें नीचे पड़े तीरों को खोज रही थीं और धनुष पर उनकी पकड़ और भी मजबूत होती जा रही थी।

अगले दिन दोपहर में सभी खाना खाकर कमरे में आराम कर रहे थे कि मामाजी अचानक नदारद हो गये।

"वाहर तो नहीं हैं?" संजू ने धीमे से पूछा। गौरव ने पर्दा हटाकर खिड़की से झांका। वाहर गली में सन्नाटा था। पत्ता भी नहीं हिल रहा था।

"तीर कमान लेकर छत पर गये होंगे," गौरव फुसफुसाया। दोनों ऊपर भागे। गौरव का अन्दाजा सही था। मामाजी मुंडेर पर खड़े पोज बनाये निशाना साध रहे थे। तीर, कमान पर था। प्रत्यंचा खिंची हुई थी।

"मामाजी ठहर..." गौरव और संजू ने रोकना चाहा कि एक चीख सन्नाटा चीरती हुई आई। किसी के भागने की आहट हुई। दौड़कर दोनों ने गली में झांका।

मैले कपड़ों में दो आदमी हाथ में ब्रीफकेस लिए दौड़ते हुये आये। चोरों की तरह इधर-उधर देखा और सामने खड़ी काली कार में बैठ गये।

"हाय मैं लुट गई, चोर-चोर," चिल्लाती हुई मेहरा आंटी वाहर आईं।

"संजू तुम मामाजी को रोको," गौरव चिल्लाया।

"लोग नीचे हैं कहीं किसी का खून न हो जाये।"

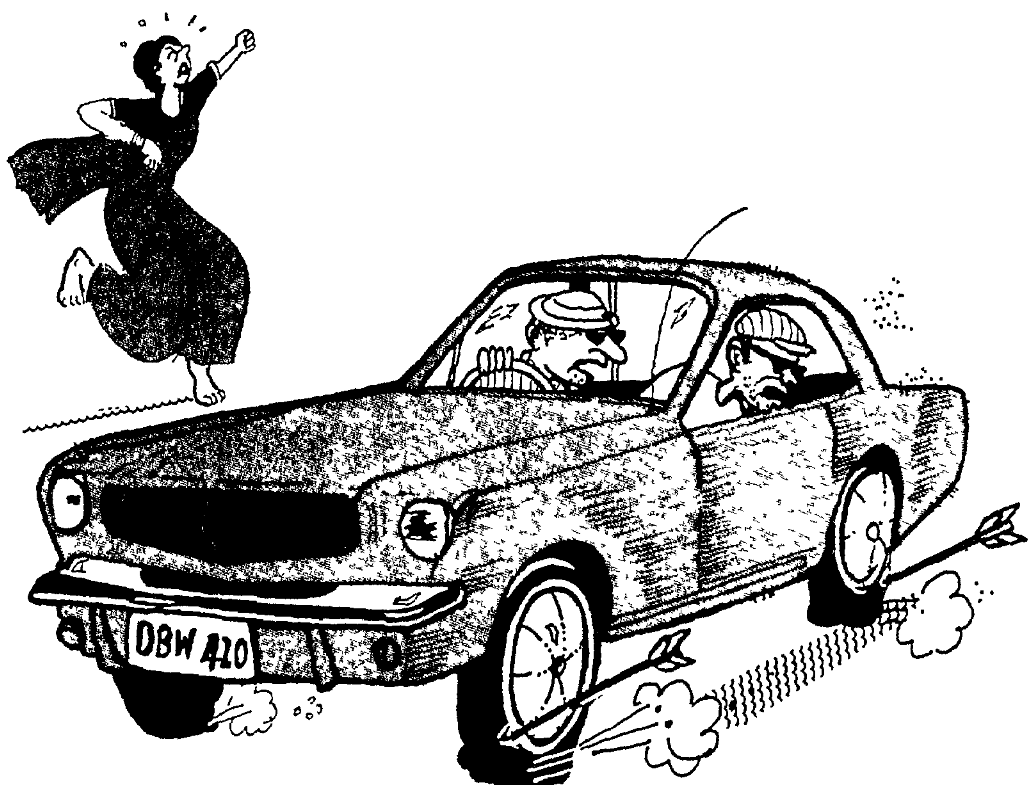
"मामाजी," संजू ने मुंडेर की तरफ दौड़ते हुए आवाज लगाई।

कार स्टार्ट हुई—इधर चटाक-चटाक-चटाक की आवाज, मामाजी के तीर छूट चुके थे। तभी मार-मार, भट्ट की आवाज आई। तीनों तीर कार में, दोनों आगे पहियों में और एक पीछे के पहिये में छिद गये। टायर पंक्चर हो गये, कार वहीं की वहीं रुक गई।

शोरगुल से लोग गली में निकल आये। दोनों चोर उतरकर भागने की कोशिश करने लगे। लेकिन घिर चुके थे। लोगों ने दोनों को दबोच लिया। सारा माल बच गया।

"वाह मामाजी क्या तुक्का लगाया," गौरव ने धीरे से तारीफ की। मेहरा आंटी की आवाज सारी गली में गूंज रही थी।

"चोरों को पकड़ा भैया ने, वाह क्या निशाना है। अरे, गौरव, संजू नीचे तो लाओ अपने मामाजी को। आज आरती उतारूंगी...," अम्मा तारीफ के पुल बांधे जा रही थीं।





सुनकर मामाजी का चेहरा खिल उठा। धनुष कंधे पर डाल अकड़ कर वोले, "आखिर हमारे शौक ने रंग दिखा ही दिया।"

तुरन्त संजू ने उनकी बात पकड़कर वायदा मांगा। "अब से निशानेबाजी खतम।"

"फिलहाल तो कुछ और शुरू करेंगे," उन्होंने उत्तर दिया।

दोनों को तसल्ली हुई कि तीरन्दाजी से छुटकारा मिला लेकिन अधरों पर फैलती स्मित सिकुड़ गई। मामाजी अभी से नये शौक के बारे में सोचने लगे थे। गौरव और संजू ने एक-दूसरे को देखा और दोनों "ऐइइ!" कह सिर पकड़ कर मुंडेर पर वैठ गये।

# फोटोग्राफी की धुन

"गौरव, गौरव," संजू धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियां चढ़कर कमरे में दाखिल हुआ।

"क्या आफत आ गई?" गौरव ने किताब से मुंह उठाये बगैर ही पूछा।

"आफत ही समझो। मामाजी कैमरा खरीद कर ले आये हैं," संजू ने सूचना दी।

"कब, कैसे?" गौरव किताब एक तरफ फेंक, घबरा कर उठ बैठा।

"बड़े छुपे रुस्तम निकले। कल जिस मित्र से मिलने गये थे, उसी ने दिलवाया है। कह रहे थे कि सारी रात फोटोग्राफी की किताब पढ़ता रहा और अब परफेक्ट फोटोग्राफर बन गया हूं," संजू ने जल्दी-जल्दी सारी बात बता दी।

"लक्षण अच्छे नहीं हैं, हमेशा की तरह यह शौक भी खतरनाक हो सकता है। कहां हैं वह इस समय?" गौरव ने पूछा।

"नीचे अम्मा की फोटो खींचने की तैयारी कर रहे हैं," संजू ने उत्तर दिया।

"बहुत अच्छे! लगता है, इस बार शुरूआत घर से ही होगी। चलो, चल कर देखें।" गौरव संजू की बांह खींच नीचे उतर गया।

नीचे आंगन में अम्मा अपने बाल खोले, गमलों के बीच स्टूल पर विराजमान थीं, हरिया और ड्राइवर हुकम सिंह एक ओर खड़े ऐसे नजारा

देख रहे थे कि जैसे किसी फिल्म की शूटिंग का आनन्द ले रहे हों। उनकी नजर अम्मा पर नहीं वल्कि मामाजी पर थी। मामाजी बहरूपिया बने हुए थे। सफेद टी-शर्ट पर ढीली-ढाली डेनिम की नीली जैकेट, शुद्ध धवल पतलून और नीले रंग के कैनवस के जूते, कंधे पर लटका काले रंग का बैग खाली दिख रहा था। उसमें रखा भी क्या होता— मामाजी सिर्फ कैमरा ही तो लाये थे और वह उनके हाथ में था, और सिर पर नीले सफेद रंग की कैप जिसका हुड आंखों तक फैला था। मामाजी कैमरे की आंख में देखते हुए कभी वायें हटते, कभी दायें और हर वार "ऊहं हूं!" करके जगह बदल लेते।

"ओफ मैं थक गई, सुरु जल्दी करो," अम्मा थके स्वर में वोलीं।

"वस थोड़ा सब्र करो—अ... हां हिलना नहीं, सही प्रकाश है इस समय," मामाजी कैमरे के पीछे से बोले। क्लिक से बटन दवाया और वोले, "थैंक्यू जीजी, अव जाओ जरा अच्छा-सा जूड़ा वनाकर गहरे रंग की साड़ी पहनकर आओ," उन्होंने आग्रह किया।

गर्दन को झटका देकर अम्मा ने वनावटी रूखेपन से कहा, "अरे मैं ही बची हूं बनाने के लिये, जाओ और किसी की फोटो खींचो।"

"अव फ्री में मॉडल कहां मिलेंगे बेचारे को," अन्दर से पापा ने कटाक्ष किया।

पापा की आवाज सुनते ही मामाजी उत्साहित हो गये। फुदक कर बोले, "जीजाजी आप तैयार हैं, चलिये वाहर लॉन में आपकी और जीजी की फोटो खींच लूं, शादी के बाद से आप दोनों की साथ-साथ फोटो नहीं खिंची। आइये, ऐसी फोटो लूंगा जैसे युगल हंसों की जोड़ी।"

मामाजी का प्रस्ताव सुनकर अम्मा झट कपड़े बदलने चली गईं। गौरव और संजू को वहां खड़ा देख मामाजी मुस्कराये। उन्हें बहलाते हुए बोले, "बाद में तुम दोनों की एक पूरी रील उतारूंगा। इस रील में तो जीजी की ही फोटो खीचूंगा।"

"ठीक है पहले हाथ साफ कर लीजिये फिर खींचियेगा," गौरव ने बड़ी शान से कहा।

थोड़ी ही देर में अम्मा तैयार होकर आईं। पापा, आफिस को देर हो रही है का बहाना बनाते हुए भी जाकर लॉन में फोटोग्राफी के लिये लगे सिंहासन बनाम दो कुर्सियों पर जाकर बैठ गये। मामाजी ने फोटो लेने के पोज बनाना शुरू कर दिये। कभी बैठकर, कभी खड़े होकर, कभी टेढ़े होकर, हर कोण से वह निरीक्षण कर रहे थे। अम्मा अवश्य ही कैमरे को देखे जा रही थीं किन्तु पापा का ध्यान अपने फूल-पौधों पर लगा था। वह इधर-उधर देख रहे थे। "हरिया, भैंसों को भगाओ, बाहर से बेल खाये जा रही हैं," उन्होंने आवाज लगाई।

"खटाक। खटाक।" मामाजी ने तीन-चार फोटो खींची और उसके बाद उनके रील खतम होने के ऐलान से लगा, सभी को राहत मिली है। तुरन्त मामाजी ने रील निकालकर पापा को थमायी और कहा, "जीजाजी आपके आफिस के पास ही 'क्लिक फोटो सर्विस' है इसे वहां दे दीजियेगा, शाम तक मिल भी जाएगी। जरूर लेते आइयेगा।"

शाम को पापा के आने की आवाज सुनकर मामाजी दौड़े। पीछे-पीछे गौरव और संजू भी भागे आये।

"कैसी आई हैं?" अम्मा ने सबसे पहले पूछा।

"अपने आप देख लेना," पापा ने सादगी से कहा फिर मामाजी की पीठ ठोककर बोले, "हां, दुकानवाला जरूर मुझे बड़े अचरज से देख रहा था। मैंने फौरन कह दिया कि सारी मेहनत मेरे साले साहब की है। अरे साहब साथ में मिलने वाला फोटो एलबम बड़े बेमन से दिया।" कह कर पापा "ह...ह...ह..." कर हंसे।

"अच्छा किया आपने," मामाजी उनकी बात को अपनी प्रशंसा समझे। कैप ठीक करके बेसब्री से लिफाफा छीनने को आगे बढ़े। पापा ने हाथ ऊपर उठा लिया। सिर हिलाते हुए बोले, "ठहरो मैं दिखाता हूं।"

पापा आराम से कुर्सी पर बैठ गये। सब उन्हें घेर कर चारों ओर खड़े हो गये। एक गड्डी अलग करते हुए अम्मा से बोले, "ये रही तुम्हारी मॉडलिंग की फोटो।" और एक-एक करके फोटो दिखाने लगे। किसी में खिड़की की तो किसी में दरवाजे की चौखट, किसी में लहराती हुई पर्दे की

छींट और किसी में सपाट पीली दीवार थी।

"मेरी कहां है?" अम्मा ने पूछा।

"ये रही," गौरव चिल्लाया और उंगली से एक फोटो के कोने में दिख रही अम्मा की साड़ी की तरफ इशारा किया। दोनों भाई जोर से हंस पड़े।

"सुरु।" अम्मा ने आंखें तरेर कर मामाजी को देखा। "मखौल करने के लिए जीजी ही बची थी।" मामाजी अपने बचाव में हाथ उठाये कुछ कहने की तैयारी में थे।

"ठहरो, ठहरो आगे भी देखो," पापा ने टोका। "ये गड्डी खाली गई, कैमरे के लैन्स से ढक्कन उतारना ही भूल गये जनाब," पापा ने मामाजी की ओर देखा। वह उसी तरह प्रहार रोकने की मुद्रा में खड़े थे। "और ये रही युगल हंसों की जोड़ी।" पापा ने अन्तिम फोटो दिखाई। फोटो में चमकती धूप में आराम से खड़ी दो भैंसें जुगाली कर रही थीं। पापा ने जोर से ठहाका लगाया, गौरव और संजू हंस-हंस कर कलाबाजियां लगाने लगे। मामाजी दबे पांव वहां से खिसकने की कोशिश में थे कि अम्मा उन पर लपकीं। "ठहर जा अभी बताती हूं। इधर आ तो," वह हाथ उठाकर मारने को दौड़ीं। मामाजी मेज के चक्कर लगाने लगे और अम्मा बुनाई की सलाइयों का हथियार बनाये उनके पीछे-पीछे भागने लगीं।

"लाओ कैमरा मुझे दे दो," उन्होंने डांट लगाई।

"पर मैं तो एक दर्जन रील ले आया हूं," मामाजी ने विनती की।

बड़ी मुश्किल से पापा ने बीच-बचाव करवाया। वह भी इस शर्त पर कि फिर कभी मामाजी कैमरा लिये या इस फोटोग्राफर की पोशाक में नजर न आयें।

जब पापा और अम्मा दूसरे कमरे में चले गये तो संजू ने छेड़ा, "हो गया शौक पूरा, मामाजी।"

"अरे ऐंगिल गलत हो गया। देखा नहीं परदे की छींट कितनी साफ आई है...", मामाजी अपने बचाव में बोले।

"और भैंसों की जोड़ी... अति सुन्दर...," गौरव फिर हंसा।

मामाजी भी फीकी-सी हंसी हंसे। बात बदलने के लिये बोले, "कल

पार्क में चलकर तुम दोनों की ऐसी तसवीरें खीचूंगा कि..."

"मारे गए," गौरव ने आह भरी। कुछ रुककर कहने लगा, "पर पार्क में बछड़े कहां होते हैं , वहीं तलाब पर चलिये, जब पापा-अम्मा की ऐसी तसवीर है तो उनके बच्चों की भी...," गौरव अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि दोनों जोर से हंसने लगे।

"तुम्हारी बहुत बढ़िया खीचूंगा। हिम्मत रखो," मामाजी ने ऐसे ढारस बंधाया जैसे फोटो खींचना पापड़ बेलने के समान हो। जल्दी ही उन्होंने आइसक्रीम का लालच देकर दूसरे दिन का प्रोग्राम पक्का कर लिया।

पार्क में गौरव और संजू को मामाजी ने चबूतरे पर बैठने का आदेश दिया और खुद खड़े होकर फोटोग्राफी के पोज बनाने लगे। कुछं ही देर में दोनों को उकताहट होने लगी। वे बेचैनी से इधर-उधर टहलने लगे। तुरन्त मामाजी ने दोनों को एक-एक आइसक्रीम दिलवाई और फिर अपने काम में जुट गये। कभी खड़े, कभी लेटे, कभी बैठे, हर ऐंगिल से फोटो लेने की कोशिश में थे। हालांकि अभी तक एक बार भी 'क्लिक' की आवाज न आई थी। गौरव ने स्थिर रहने की बहुत कोशिश की पर संजू उसे हिलाता रहा। कभी कोहनी मारकर, कभी टंगड़ी अटका कर। "खाते रहो तुम लोग, फोटो स्वाभाविक आनी चाहिए," मामाजी ने कहा। दोनों ने झट से एक बार में ही सारी आइसक्रीम मुंह में रख ली। "खायें क्या?" वे खाली कप दिखाकर बोले।

"और ले आओ," मामाजी ने कैमरे में से देखते हुए कहा।

संजू जल्दी से दो कप और लेने भागा। आइसक्रीम का ठेला पास ही खड़ा था। "यहीं रुके रहो," उसने आइसक्रीम वाले को आदेश दिया, और अपने स्थान पर आ गया।

दोनों आइसक्रीम जल्दी-जल्दी खतम करने में लगे हुये थे कि एक घोर गर्जना ने उन्हें चौंका दिया।

"ये क्या हो रहा है?" किसी ने गरज कर पूछा।

मामाजी के दोनों ओर दो लहीम-शहीम कसरती जिस्म वाले पहलवान खड़े थे। मामाजी बिलकुल ऐसे लग रहे थे जैसे खंभों के बीच में छड़ी।

"मजनूं के अवतार हो या पुरानी फिल्मों के रोंदू हीरो। तब से लड़की की फोटो खींचने में जुटे हो। क्या बहू-बेटियां, माताएं-बहनें पार्क में आराम से बैठ भी नहीं सकतीं?" एक बोला। वह रुका तो दूसरे ने बोलना शुरू कर दिया।

"अरे, शक्ल से तो दुरुस्त लगते हो, लेकिन ये हरकतें छैलाओं वाली क्यों?" पूछकर उसने मामाजी के कंधे पर अपना भारी-भरकम हाथ धरा। मामाजी उसके बोझ से एक ओर को दब गये। इतनी देर में एक हवलदार भी वहां आ पहुंचा।

"कौन-सी लड़की दिखाई दे रही है तुम्हें? मैं तो अपने..." वह समझा रहे थे कि तभी एक बहुत ही बारीक काया की कन्या आई। घण्टे जैसे स्वर में उसने शिकायत की, "हवलदार जी, मैं बहुत देर से देख रही थी ये इधर-उधर से मेरी फोटो लेने की कोशिश कर रहे हैं। मैं तो डर गई तभी मैंने इन दोनों भाई साहब से कहा। बेचारे अपनी दण्ड-बैठक छोड़कर इनकी खबर लेने यहां आ गये।"

"क्या माजरा है?" नाटे हवलदार ने बारीक आवाज में पूछा। कुछ ही देर में अच्छा खासा मजमा लग गया। सब आपस में हंस-हंस कर मजाक उड़ाने लगे। गौरव से न रहा गया। गुस्सा होकर बोला, "इन आंटी को गलतफहमी हो गई है। मामाजी हमारी फोटो खींच रहे थे।"

"हां, हां," मामाजी ने हकला कर हां में हां मिलायी पर हवलदार उनके कैमरे की ओर बराबर शक की नजर से देखे जा रहा था।

"आप मानते क्यों नहीं," संजू ने आगे बढ़कर कहा। "अभी मामाजी सीख रहे हैं और फिर फोटो कहां से खींचेंगे। कैमरे में तो रील नहीं है।" उसने हवा में तीर फेंका। लेकिन मामाजी के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

"झूठ बोलते हैं, मैं कहती हूं ये रील दिलवा दीजिये," पुनः घंटा ध्वनि गुंजित हुई।

बगैर हिचके मामाजी ने कैमरा खोलकर दिखा दिया। वह वास्तव में खाली था। दरअसल, मामाजी रील डालना ही भूल गये थे। यूं ही ऐंगिल देखे जा रहे थे।

"अजीब मजाक है, कोई शरीफ आदमी अपना शौक भी पूरा नहीं कर सकता। बताइये तो, इनकी कसरत में भी विघ्न पड़ा।" अब मामाजी की बारी थी, उन्होंने जबरन नाराजगी जताई। दोनों पहलवान मुंह बिगाड़ते हुये चले गये।

"माफ कीजिये," वह कन्या बोली पर मामाजी ने अनसुनी कर दी। कैमरा संभाल उल्टी दिशा में चल दिये। "आओ भानजो कहीं और दूसरी तरफ चलें।"

"नहीं, अब घर चलिये। आज का शो पूरा हुआ," गौरव ने नाराज होकर कहा।

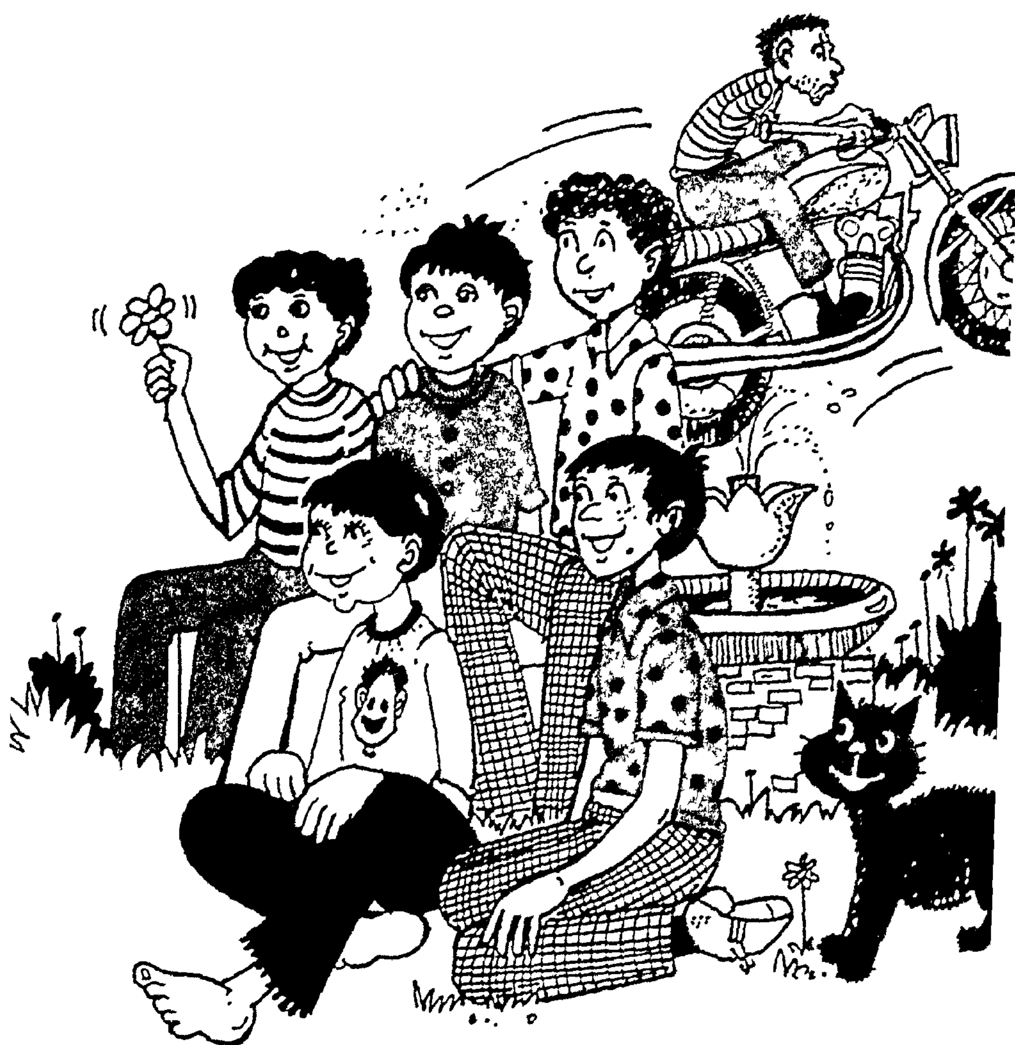


"पता नहीं मैं ही क्यों गलतफहमी का शिकार वन जाता हूं। मेरी ग्यारह रीलों का क्या होगा?" मामाजी ने दुखी मन से कहा।

तभी संजू को अपने मित्र दिखाई दिये। "गौरव, पंकज और राहुल भी यहां हैं। मामाजी हमारी दोस्तों के साथ फोटो खींचेंगे तो रुकेंगे," संजू ने शर्त रखी। अपना शौक पूरा करने के लिए उन्हें सारी शर्तें मंजूर थीं। तुरन्त मान गये। बोले, "हां, हां क्यों नहीं।"

चारों को फव्वारे के पास बैठाकर मामाजी ने कैमरे में रील डाली। दूर खड़े होकर फोकस करने लगे।

"रेडी," मामाजी ने पूछा।



"रेडी।" उत्तर देकर गौरव, संजू और उनके मित्र मूर्ति की तरह सीधे खड़े हो गये। सामने कैमरे की तरफ से क्लिक की आवाज आई और दूसरी तरफ से घिर्रर्र किसी मोटर साइकिल की। फव्वारे का चक्कर काट कर एक मोटर साइकिल सवार ने आगे का पहिया उचका कर ऊपर से मोटर साइकिल कुदाई और गायब हो गया। सब देखते ही रह गये।

तभी सामने से एक और मोटर साइकिल पर दो पुलिसवाले आये। "क्या किसी मोटर साइकिल को इधर से जाते देखा?" उन्होंने पूछा।

"जी... उधर चला गया," मामाजी ने उत्तर दिया।

"आज फिर हाथ से निकल गया," हाथ मलते हुए वे बोले।

"साब कोई पहचान नहीं पाता जग्गा को, उसकी आज तक फोटो नहीं मिली," दूसरे ने कहा।

"जग्गा?" मामाजी ने पूछा।

"हां, बड़ा तंग कर रखा है, कभी पर्स लेकर भागता है, कभी चोरी करता है...," वह बता रहे थे कि गौरव बीच में ही बोल उठा, "मामाजी, जब आप हमारा फोटो खींच रहे थे तब वह ठीक हमारे पीछे था। हो सकता है..."

"अगर उसका फोटो मिल जाये तो क्या कहने," मानों इस विचार से ही पुलिसवाले के मुंह में पानी आ गया। प्लीज क्या हम ये रील धुलवा कर देख सकते हैं?"

"लेकिन इस रील से तो अभी एक ही फोटो ली है," मामाजी ने एतराज किया।

"अजी मैं आपको दो रील दे दूंगा। चलिये तो," दोनों पुलिसवालों ने मिन्नत की।

मामाजी आनाकानी करते रहे। "आखिर क्यों?" गौरव ने पूछा।

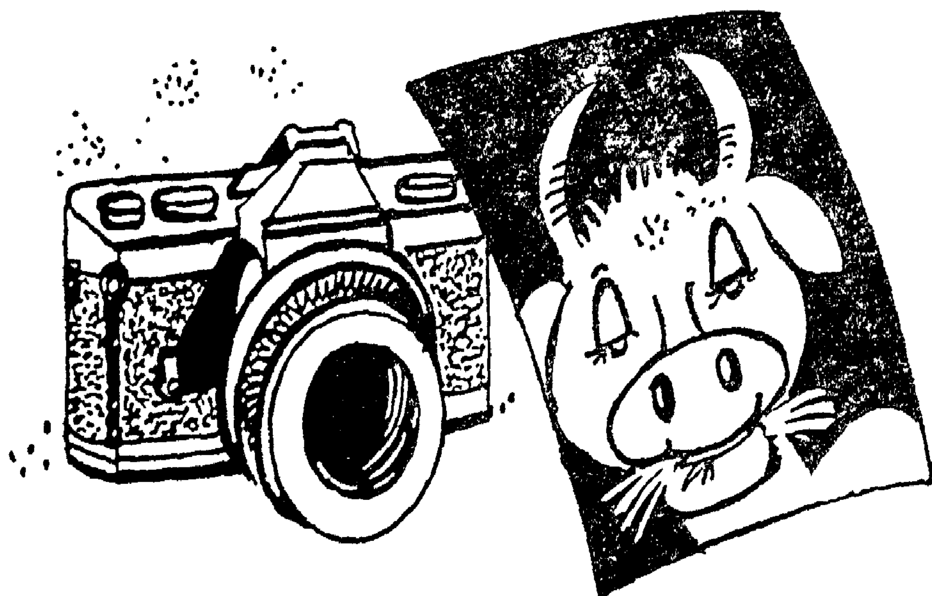
"मान लो कल जैसी ही खिंची हो तो?" धीमे से मामाजी ने मुश्किल समझाई।

"देखी जाएगी, आपको तो दो रीलें मिल जायेंगी न," गौरव ने हिम्मत बंधायी।

पास ही के बाजार में सब 'क्लिक फोटो सर्विस' की दुकान में गये। थोड़ी ही देर में रील धुल कर आ गई। फोटो बहुत स्पष्ट थी, चारों मित्रों के साथ नामी अपराधी जग्गा मोटर साइकिल पर यूं सवार था जैसे शिवाजी अपने घोड़े पर बैठे हों। पुलिस इंस्पेक्टर ने मामाजी को गले से लगा लिया। "साब, कमाल कर दिया आपने।"

मामाजी शर्माते हुए हंसे और बोले, "अजी अपने-अपने शौक हैं।"

मामाजी की बात सुनकर गौरव ने संजू से हाथ मिलाया और कान में कहा, "अब तो पक्के फोटोग्राफर बन गये मामाजी, पुलिस प्रमाण-पत्र के साथ।" दोनों जोर से हंस पड़े।



# बहरूपियेपन की सनक

"गौरव। संजू। मामाजी आ गये," अम्मा की आवाज ने मामाजी के आगमन की सूचना दी।। इस बार काफी लम्बे अरसे के बाद मामाजी आये थे। करीब चार महीने बीत गये थे। वरना दो महीने में ही उनका अपने फॉर्म से मन ऊब जाता था और वह शहर में आबोहवा बदलने आ जाते। उनके आते ही मानों घर में तरावट-सी आ जाती। अपनी कॉपी, कलम छोड़कर दोनों धड़धड़ाते हुए नीचे आये तो देखकर हैरान रह गये। दरवाजे के पास सूटकेस, पेटी, टोकरी और एक बड़ा ट्रंक रखा हुआ था। आश्चर्यचकित हो ठोढ़ी उचका कर गौरव ने किशनसिंह से इशारे से पूछा कि किसका सामान है। "भइयाजी के साथ आया है," किशनसिंह ने हंसी दबाकर उत्तर दिया।

मामाजी का सामान देख गौरव को दुगना आश्चर्य हुआ। क्या उनका तबादला हो गया है? असंभव। ऐसा तो हो ही नहीं सकता, फॉर्म छोड़कर मामाजी कहां जायेंगे। इतना ढेर सारा सामान पारो में फिट कैसे हुआ और आखिर इतने बक्सों में क्या लाये हैं? मामाजी हमेशा तो एक छोटा सूटकेस लाते थे। क्या इस बार मुर्गियों का दाना और भैंसों का चारा भरकर बेचने के लिये लाये हैं। अभी गौरव इस असमंजस में था कि उसे संजू की कोहनी लगी। मुंह उठाकर देखा तो मामाजी खड़े थे। ढीली-ढीली खाकी निकर और कमीज, घुटनों तक के खाकी स्टॉकिंग, गमबूट, कमर में

कारतूसों की पेटी और सिर पर खाकी 'सोला' हैट। तन्दुरुस्त मामाजी किसी अंग्रेज शिकारी से कम नहीं लग रहे थे। गौरव और संजू उनका यह हुलिया देखकर हैरान रह गये। यह क्या हुआ मामाजी को, हमेशा जीन्स और चारखानी कमीज पहनते थे। अचानक यूं हुलिया वदलने की क्या सूझी। वह भी निकर पहनकर। और फिर जंगल से दूर शहर में शिकारी भेष का क्या मतलब, वह खासे वहरूपिये लग रहे थे। गौरव यह सोच ही रहा था कि मामाजी की वोली ने उसे और भी चौंका दिया।

"हे एई गौरव एंड संजू वावा कैसा है, टुम लोग। अंह—लुकिंग टॉलर (लम्बे लग रहे हो)।" फिर किशनसिंह की तरफ मुड़कर वोले, "ऑडली (अर्दली) हम वावा लोग के कमरे में रहेगा।"

"जी हुजूर," कह कर हंसी दबाता हुआ किशनसिंह हुक्म वजाने चला गया। गौरव से और रुका न गया। "मामाजी यह सब क्या है। यह भेष, यह गोराशाही भाषा, आप और इस..."

अभी गौरव अपनी बात पूरी कर भी न पाया था कि संजू ने सवाल किया, "क्या ये असली कारतूस हैं? सब भरे हुए हैं?"

"श-श-श...ऊपर चलो सब समझाता हूं।" मामाजी ने गौरव के कंधे थपथपा कर अपने शाही अन्दाज में आश्वासन दिया। मामाजी को 'नार्मल' देख गौरव ने शान्ति की सांस ली और मामाजी की ओर देखकर मुस्कराया।

"तुम चलो, मैं जीजी को मसका लगाकर, कुछ पकौड़ियों का इन्तजाम कर के आता हूं।" चुटकी वजा मामाजी अन्दर की ओर लपके। गौरव और संजू फुदकते हुये ऊपर चढ़ने लगे।

"लगता है फिर कोई मुसीबत आने वाली है," संजू ने गम्भीरता से कहा। गौरव ने सिर हिलाकर अपनी सहमति दी, वह संजू की राय से पूरी तरह से सहमत था, आखिर मामाजी का यह नया शौक जो था।

जाकर देखा उनका कमरा अच्छा खासा 'वाक्स-रूम' वन गया था। जल्दी-जल्दी अपनी कितावें समेटीं और पलंगपोश ठीक किया। तभी मामाजी एक शैतान बालक की भांति उछलते हुये आये। "मामाजी,

बताइये अचानक इस परिवर्तन का कारण क्या है?'' गौरव ने पूछा।

''क्या फॉर्मिंग त्याग दी है? लेकिन मामाजी अब तो अपने देश में शिकार करने की सख्त मनाई है,'' संजू बात को बढ़ाते हुए बोला।

''नहीं, नहीं ऐसा कुछ नहीं है,'' मामाजी पलंग पर पसर गये। ''अरे अभी मनोहर रंग जी...वही फिल्म प्रोड्यूसर आये थे अपनी फिल्म की शूटिंग के लिये। फॉर्म के पास ही उन्हें लोकेशन पसन्द आई।''

''सच, मामाजी,'' संजू उछल पड़ा। ''आप फिल्म में शिकारी का रोल कर रहे हैं। इसीलिये...''

मामाजी ने गर्दन को झटका दिया और बोले, ''नहीं। मनोहर रंग जी से अच्छी दोस्ती हो गई। फॉर्म पर आते-जाते रहे। जाते-जाते मुझे बम्बई आने का निमंत्रण दे गये हैं।''

''आपको कोई रोल ऑफर किया है?'' गौरव ने पूछा।

''करेंगे ही, वरना बुलाते क्यों। अगली फिल्म बना रहे हैं 'जमीन से आसमान तक'। अब मुझे भी तो हर तरह के रोल के लिए तैयार रहना चाहिए। जमीन से आसमान तक में कोई भी भूमिका मिल सकती है।''

संजू ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि गौरव ने कोहनी मार कर चुप रहने का इशारा किया। उनके यकीन पर उसे आश्चर्य हो रहा था, पर मामाजी थे लाजवाब, उनके इरादे बेहिसाब, गौरव ने मन ही मन सोचा। उसकी नजर मामाजी के असबाब की तरफ गई। मामाजी उसकी जिज्ञासा ताड़ गये। समझाते हुए बोले, ''भई, तरह-तरह की पोशाकें हैं, तलवारें, जिरह-बख्तर, साफा, पगड़ी, कलगी, मुकुट, वगैरह-वगैरह। पोशाक बदलने से पूरे व्यक्तित्व का परिवर्तन हो जाता है जिससे उस भूमिका को अदा करने में आसानी रहती है।''

दोनों ने कठपुतली की तरह सिर हिलाया। तभी झटके के साथ मामाजी सावधान पोजीशन में खड़े हो गये और पुनः गोराशाही भाषा में बोले, ''अब हमको प्राइवेसी मंगता, थोड़ा गुसल करके आयेगा।'' गौरव और संजू ने कस के जोरदार सैलूट दिया और लैफ्ट-राईट करते हुए बाहर निकल गये।

मामाजी का अधिकांश समय कमरे में ही बीतता। कमरा क्या पूरा ग्रीन रूम बन गया था, दीवार पर चमकदार पोशाकें लटकी हुई थीं। पढ़ने की मेज पर रंग-रंग के विग और टोपियां, ड्रेसिंग टेबल पर मेकअप का रंग-रोगन। दिन में दो बार तो जरूर ही मामाजी का चोला बदलता। कभी शंहशाह शाहजहां बनकर नफीस उर्दू में मुमताज की पुकार करते, कभी ज्योतिषी बनकर अम्मा की कुंडली बांचते और अम्मा को पता भी न चलता कि ज्योतिषी और कोई नहीं उनका छोटा भाई सुरु ही है। एक बार तो मामाजी को घीसू धोबी समझ अम्मा ने मैले कपड़े का ढेर लाकर पटक दिया। घर में हर समय विविध मनोरंजन कार्यक्रम होता रहता। लगातार फैंसी-ड्रेस शो चल रहा था। प्रत्येक भेष और बालों के साथ मामाजी की चाल-ढाल और बात करने का लहजा ऐसा बदलता जैसे न्योनसाईन बोर्ड के रंग और मजमून। गौरव और संजू को बड़ा मजा आ रहा था। उनका सप्ताहांत आनन्दपूर्वक कटा।

स्कूल जाने के लिये तैयार, सुबह जब दोनों नाश्ता कर रहे थे कि तभी मामाजी सिर पर साफा बांधे, खद्दर का मटमैला कुर्ता, ऊंची-ऊंची धोती और नुकीली पटियाला जूतियां पहने, कन्धे पर लाल अंगोछा डाले और चेहरे पर झुर्रियों का मेकअप किये आये। बिलकुल किसान भाई चौधरी नौबतसिंह जो प्रायः टी वी. पर कृषि दर्शन कार्यक्रम में अनाज के रख-रखाव के तरीके समझाने आते थे, की तरह लग रहे थे। आते ही शिकारपुर के जाटों की तरह अम्मा से बोले, "हुर्रे, यो क्या लाली, तुम ऐसेई बैट्ठी हो, घणो जाड्डो पड़ रियो है। नुकै चद्दर लिपेट लो। सुने हैं अमीचन्द की खड़ी फसल को पाला मार गया। धुंआ ने देगा तो योई होगा..."

अम्मा खिलखिला कर हंस पड़ीं। हंसते-हंसते बोलीं, "चलो, तुम लोग जाओ स्कूल को देर हो जायेगी।" गौरव और संजू भी हंसते हुए बेमन से उठ गये लेकिन मामाजी अपना पार्ट पूरा करने में जुटे थे। बड़ी गम्भीरता से पापा को आलू की खेती के बारे में समझाने लगे।

स्कूल से लौटे तो बस स्टाप हमेशा की तरह वीरान था। सिर्फ एक

आदमी बैठा हुआ था। शायद नन्ही पिंकी का नौकर था जो अकसर उसे लेने आता था। दोपहर के इस क्षण में आमतौर पर सड़क भी कम ही चलती थी। पिंकी के बस से उतरते ही वह नौकर आगे आया।

"आ गया बेबी, हमारी बेबी आ गया," कह कर उसने पिंकी से उसका बैग और पानी की बोतल ले ली। गौरव क्षणभर के लिये चौंका, क्योंकि रोजाना जो आता था वह कभी ऐसे मिश्री युक्त बोल नहीं बोलता था। शायद यह दूसरा हो। उधर पिंकी भी ऐसा दुलार पाकर और भी फैल गई। मचलकर चिल्लाई, "गोदी।" नौकर ने कन्धे पर बैग और पानी की बोतल लटकाई और दूसरे हाथ से पिंकी को उठाया।

"हमारी बेबी घर जाएगी, खाना खायेगी, गाना गायेगी..." बड़बड़ाता हुआ वह जाने लगा। गौरव और संजू सड़क पार करने के लिए मुड़े, तभी... "अरे बचाओ, मेरी लड़की को उठा के ले जा रहा है, बचाओ," की पुकार ने उन्हें चौंका दिया।

"अरे ये तो माथुर आंटी हैं," गौरव ने कहा। आंटी जोर से चिल्लाकर भागीं, "पिंकी। मेरी लड़की को उठा..."

"मम्मी।" पिंकी अपनी मां को देखकर चिल्लाई। उधर से माथुर आंटी भागी आ रही थीं। गौरव और संजू वापस मुड़े पिंकी को बचाने, पिंकी अभी उसी नौकर की गोद में चढ़ी हुई थी और "मम्मी, मम्मी" चिल्ला रही थी।

चीख-पुकार से लापरवाह वह नौकर उसी तरह बातें करते हुए चला जा रहा था। गड़बड़ी देखकर एक कार रुकी, दो लम्बे-चौड़े लड़के उतरे। दूसरी तरफ से नुक्कड़ का पान-बीड़ी वाला बांके भागा आया। गौरव ने खंभे के पास बैग पटका और नौकर की ओर लपका। देखते ही देखते वीराना आबाद हो गया। सब उस नौकर की ओर बढ़े जो मुंह बाये हक्का-बक्का सारा तमाशा देख रहा था। पिंकी छिटक कर अपनी मम्मी से जा चिपटी। एक लड़के ने नौकर का गिरेबान पकड़कर आंख दिखाई, "क्यों बे।"

"लीव मी, यू आर मिसअन्डरस्टैंडिंग, (छोड़ दो मुझे, तुम गलत

समझ रहे हो)," नौकर ने अंग्रेजी में कहा।

गौरव ने घूर कर देखा, "संजू, मामाजी," वह चिल्लाया। लेकिन उस लड़के की पकड़ मजबूत होती जा रही थी।

"अंग्रेजी में बोलता है किडनैपर कहीं का," वह चिल्लाया।

"मेरी बच्ची को ले जा रहा था," माथुर आंटी ने विलाप किया।

"हमारे इलाके में ये जुर्रत," बांके ने बांहें चढ़ा लीं।

"सुनिये तो...," मामाजी गिड़गिड़ाये।

"ये हमारे मामाजी हैं," गौरव ने उछल कर लड़के के उठे हुये हाथ को रोक लिया।

"फैंसी-ड्रेस की प्रैक्टिस कर रहे हैं," संजू ने जल्दी से समझाया।

"ही इस राइट (यह ठीक कह रहा है)", मामाजी घबराये हुए स्वर में बोले।

"शट अप, हूं, पूरा गैंग है," दूसरे लड़के ने हुंकार भरी।

पर पिंकी, माथुर आंटी और बांके ने गौरव और संजू की शनाख्त की और बड़ी मुश्किल से दोनों ने सबको यकीन दिलाया कि वाकई मामाजी फैंसी-ड्रेस में हैं। किसी तरह मामला रफा-दफा हुआ। माथुर आंटी मुंह बिगाड़ती हुई चली गईं, बांके बड़बड़ाता हुआ "कमी नहीं गालिब बिन ढूंढ़े हजार मिलते हैं।" और दोनों लड़के हाथ मलते, पंजे चटकाते कार में जा बैठे।

"मामाजी, क्या जरूरत थी इस नाटक की..." संजू बिगड़ा किन्तु मामाजी के मुंह पर एक शिकन भी नहीं थी। वह बहुत खुश नजर आ रहे थे। "देखा कितना सजीव अभिनय था, तुम भी धोखा खा गये।"

"सो तो है ही, कुछ ज्यादा ही सजीव था," गौरव मान गया। "किन्तु मामाजी इस बार तो हमने आपको पिटने से बचा लिया। अगली बार हम बीच में नहीं आयेंगे," वह गुस्सा होकर बोला।

"हां, आपके शौक एक न एक मुसीबत खड़ी कर देते हैं," संजू नाराज होकर बोला।

"अच्छा बाबा अच्छा। चलो खाने के बाद एक और नमूना पेश

करूंगा,'' मामाजी का इरादा सुनकर दोनों ने उन्हें घूर कर देखा। मामाजी दोनों को रोकते हुये कहने लगे, ''हां ठीक है, ठीक है, तुम साथ मत आना, दूर से ही कमाल देखना।''

खाना खाकर लगभग एक घंटे तक कमरे में बंद रहने के बाद मामाजी खड़ताल कमण्डल युक्त जटाधारी साधु के भेष में प्रकट हुए। खड़ताल हिलाकर जोर से नाद किया, ''हरिओम शंकर।''

''मारे गये,'' गौरव और संजू दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

''भय सुख नाशक है। चल बच्चा,'' मामाजी ने आज्ञा दी।

''आप आगे, हम दस गज की दूरी पर,'' गौरव ने याद दिलाया।

मामाजी लम्बे-लम्बे डग भरते हुए ''हरिओम शंकर'' का नारा लगाते हुए चल दिये। राहगीरों को बिन मांगे आशीर्वाद देते हुए मामाजी ऐसे चल रहे थे जैसे सामने धूनी रमाने के लिये हिमालय की चोटी दिखाई दे रही हो।

गौरव और संजू उनके पीछे, कुछ दूरी पर अपनी हंसी रोके सारा तमाशा देखते हुए चल रहे थे। ''जो कुछ भी हो, मामाजी वास्तव में साधु लग रहे हैं,'' संजू ने गौरव के कान में कहा। गौरव ने मुस्करा कर सहमति जताई परन्तु उसकी निगाह मामाजी पर ही लगी हुई थी। दूसरी गली में मामाजी एक बड़े फाटक के सामने जाकर रुके। वहां कोई न था। वहीं से उन्होंने इशारा किया कि तैयार हो जाओ तमाशा देखने को। दोनों गली के दूसरी तरफ पेड़ की ओट में हो गये।

मामाजी ने दस्तक दी। कुछ देर बाद एक दोहरे बदन की अधेड़ गृहिणी ने दरवाजा खोला। मामाजी तैयार थे, पट खुलते ही आंखें मूंदकर कहने लगे, ''शुभमस्तु कल्याणमस्तु। जै शंकराय नमो नमः... हरिओम शंकर...'' गृहिणी ने अपनी पैनी दृष्टि घुमाई, उसके चक्षु फैले, हैरानी से मुंह खुला रह गया। कुछ भय, कुछ परेशानी के भाव उसके चेहरे पर आये। पहले घबराकर सिमटी, फिर एकाएक झांसी की रानी की तरह तन कर खड़ी हो गई। गृहिणी के कड़कते स्वर ने मामाजी के हरिओम शंकर के जाप को मलिन कर दिया, ''अच्छा, कल जै नारायण कर रहा था आज

हरिओम शंकर, एक दिन में भगवान बदल लिये, पाखंडी, दुराचारी।" उसने डांटा और जोर से आवाज लगाई, "अजी सुनते हो, जल्दी आओ, आ गया वही जो कल मेरी तीन स्टील की चम्मचें, दो कटोरी और पीतल का सरौता अपने झोले में डालकर ले गया था। बेटा गणेश, विनायक जल्दी आना।"

मामाजी सकपका गये। कांपते हाथों में खड़ताल झनझना उठी। घवरा कर हाथ जोड़ते हुए वोले, "क्या कर रही हैं पार्वती वहन, मैं वो नहीं।"

"मुये, मेरा नाम भी पता करके आया है..." गृहिणी दांत पीस कर वोली।

"वह तो... गणेश की मैया पार्वती ही तो..." मामाजी कांप रहे थे। हकला...हकला कर वोले जा रहे थे, "मैं वह नहीं... मैं तो नाटक... फैंसी ड्रेस..."

"बच्चू अभी सारा नाटक थाने के रंगमंच पर पेश कराता हूं... ठहर जा... इस ड्रेस के किराये के लिये भीख न मंगवाई तो वात रही," अन्दर से धोती संभालते एक सज्जन मोर्चे पर आये, गृहिणी एक ओर कमर पर हाथ रख शान से मटकने लगी। उनके दोनों पुत्रों ने मामाजी की दाढ़ी की ओर हाथ बढ़ाया। एक हाथ से रोकते एक हाथ से दाढ़ी संभाले मामाजी ने समझाने की कोशिश की, "भई मैं... उस गली में..." लेकिन वहां कौन सुनने वाला था। गौरव आगे बढ़ा पर संजू ने हाथ पकड़ कर रोक लिया, "हमने तो मामाजी को पहले ही मना किया था, निवटने दो उन्हें।" तीनों मामाजी की ओर लपके। एक का हाथ रुद्राक्ष की माला पर पड़ा, दूसरे को मामाजी ने कमण्डल थमाया, अपनी जटाएं नोच धोतीधारी सज्जन को पकड़ाई और सरपट भागे।

"गौरव...संजू," मामाजी ने पुकारा।

दोनों दौड़कर उनके पास पहुंचे।

"बच गये मामाजी। अव ये लीलाएं त्याग दीजिये। देखा आज दूसरी बार पिटते-पिटते बचे हैं," गौरव ने समझाया।

"हां मामाजी, तीसरी बार शायद..." संजू ने वाक्य अधूरा ही छोड़



अपना गाल सहला कर इशारे से सारी बात समझाई। मामाजी का हाथ भी अपने गाल पर गया वहां दाढ़ी चुभी। झुंझलाकर दाढ़ी खींची और दर्द से कराह उठे। "आह!" उन्होंने दाढ़ी को अच्छी तरह से चिपकाया था। सिर हिलाकर बोले, "हां ठीक कहते हो।"

मामाजी के अभिनय का अभ्यास तो रुक गया किन्तु मामाजी सारे दिन चिंतित रहे। उधर गौरव और संजू संतुष्ट थे कि अब कोई घटना नहीं होने वाली है। आराम से दूसरे दिन स्कूल चले गये। दोपहर में लौटे तो बस स्टाप पर किसी को न देख गौरव ने ठंडी सांस ली। " शुक्र है, आज मामाजी का कोई नाटक तैयार नहीं है।"

ज्यों ही वस गई, विजली की गति से पीछे से दो भारी भरकम नकाबपोश आये, गौरव और संजू को धक्का देकर गिराया और पिंकी को उठाया और भागने लगे। "मम्मी, मम्मी," पिंकी चिल्लाई।

"पिंकी..." माथुर आंटी की गली के मोड़ से आवाज आई।

"पिंकी, वचाओ..." आंटी शोर मचाने लगीं।

नकावपोश अभी दूसरे बिजली के खंभे तक ही पहुंचे होंगे कि खंभे की ओट में से एक पुलिसवाला निकला, दोनों ठिठक कर खड़े हो गये। "ह ह ह ह..." हंसता हुआ वह दोनों की तरफ बढ़ा, दोनों के कदम पीछे हटे, पिंकी को छोड़ा और तपाक... से उलटी दिशा में ऐसे भागे जैसे कॉरपोरेशन की गाड़ी को देखकर खोमचेवाले।

"हं, भाग गये हुकमसिंह हवलदार को देखकर। अच्छे-अच्छे भाग जाते हैं," वह पुलिसवाला हंसा।

गौरव ने गौर से देखा, "अरे, मामाजी," वह संभल कर खड़ा हो गया।

"मामाजी, आप हुकमसिंह हवलदार बने हुये हैं," संजू चौंक कर खड़ा हो गया। अपना डंडा घुमाते हुये मामाजी निकट आये।

"कहो कैसी रही?"

उंगली उठा तारीफ करते हुए दोनों साथ बोले, "आज तो मामाजी... सुपर क्लास।"

उधर घबराई हुई पिंकी अपनी मम्मी से चिपक गई। माथुर आंटी अपने आपको संभालती आगे आई। आंखों में आंसू लिये बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़ कर बोलीं, "आपको कैसे धन्यवाद दूं भाई साहब। आपने मेरी बेटी को बचा लिया।" कुछ रुककर बोलीं, "वैसे अच्छा शौक है आपका, बड़ा सजीव अभिनय करते हैं। आपको तो फिल्मों में होना चाहिए।"

"हैं... हैं... शुक्रिया।" गदगद हो मामाजी ठीक से धन्यवाद भी न दे पाये। हाथ जोड़, सातवें आसमान पर तैरते हुए घर की ओर चल दिये।

मामाजी ऐसे चल रहे थे जैसे कोई सेनापति किला फतह करके बाजे-गाजे के साथ लौट रहा हो। घर के फाटक से ही अम्मा ने उत्तेजित स्वर में आवाज लगाई, "अरे सुरु तुम्हारा निमंत्रण आया है किसी नई फिल्म के प्रिव्यू के लिए।"

"अच्छा।" मामाजी ने चहक कर कहा और दोनों की ओर मुड़कर बोले, "जरूर मेरे मित्र रंग जी का होगा।"

दौड़कर उन्होंने अम्मा से कार्ड लिया। पढ़ते ही उनके चेहरे की दीप्ती फीकी पड़ गई। गौरव समझ गया कुछ गड़बड़ है।

"क्यों मामाजी क्या हुआ?" उसने पूछा।

"कौन-सी नई फिल्म है मामाजी?" संजू ने पीछे आते हुये पूछा।

"जमीन से आसमान तक," मामाजी ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया। क्षणभर को चुप रहे फिर जोर से हंस कर बोले, "धत् तेरे की।"

गौरव और संजू ताली बजाकर बोले, "धत् तेरे की।"

और इसी झटके के साथ मामाजी की बहरूपियेपन की सारी सनक दूर हो गई।

आज तड़के-तड़के ही उठकर मामाजी पारो के नीचे जा बिछे। यूं तो पारो को चमकाते, तेल लगाते, बार-बार बोनट खोल इंजन को ठोकते-बजाते वह कभी न थकते थे। अम्मा तो अकसर कहा करतीं, "सुरु जितना समय तुम अपनी कार में लगाते हो, उतने में एक पूरे गैराज का काम कर सकते हो। दूसरों का भी भला होगा।" आज तो बहुत लगन से मामाजी सारे पेचकस, पाने, तेल की कुप्पी लेकर चटाई बिछा पारो के नीचे लेटे कुछ ऐंठने-मरोड़ने में लगे थे।

"क्या गड़बड़ हो गई?" गौरव ने नीचे झांक कर पूछा।

"बहुत गड़बड़ है, उलटा गियर ठीक कर रहा हूं, अटकता था," मामाजी ने अपने पाने पर नजर गड़ाये हुये उत्तर दिया। उनका सारा ध्यान गियर बॉक्स पर केन्द्रित था।

गौरव ने दौड़कर संजू को सूचना दी, "देखना अब पारो उलटी ही उलटी चलेगी। मामाजी रिवर्स-गियर ठीक कर रहे हैं।"

"हो गया कल्याण। पारो को उलटी चलती देख मामाजी को किसी सर्कस में काम करने का निमंत्रण अवश्य मिल जायेगा।"

दोनों जोर से हंसे और अपनी सर्दियों की छुट्टियों का पूर्ण लाभ उठाने के लिए बल्लेबाजी में जुट गये।

बहुत समय बीतने पर मामाजी कार के नीचे से उजागर हुये। शरीर को

अल्बेट देकर, हाथ फैलाकर अंगड़ाई लेते हुए बोले, "ठीक हो गई, एकदम फिट।"

"मामाजी चलाकर तो देख लीजिये," गौरव ने सुझाव दिया।

"क्या बात करते हो," मामाजी ने गौरव के सुझाव का तिरस्कार करते हुए कहा। फिर अकड़कर बोले, "अरे मैं तो पारो को छूकर इसके नुक्स भांप लेता हूं। एकदम चुस्त-चौकस है," मामाजी ने बोनट को ठोककर कहा। अपनी पारो की चर्चा मामाजी सदैव ही गदगद कंठ से करते थे।

उस दिन भी, रोज की तरह मामाजी ने मोती झील का प्रोग्राम बना लिया। गौरव और संजू को आमंत्रित करके स्वयं पारो को रगड़-रगड़कर चमकाने में लग गये।

"वाह मामाजी, सन् अड़तालीस के मॉडल को अठासी का बना रहे हैं," संजू ने व्यंग किया।

संजू की बात सुनकर मामाजी बहुत प्रसन्न हुये। हंसकर बोले, "इसके सामने आजकल की नई कारें फीकी लगती हैं। चलो बैठो," उन्होंने आदेश दिया। जैसे ही संजू दरवाजा खोलने के लिए बढ़ा गौरव ने उसका हाथ पकड़कर रोका, फुसफुसाकर बोला, "आज ही गियर ठीक हुये हैं, एडवेन्चर के लिये तैयार हो? हनुमान चालीसा याद है न?"

संजू खी-खी करके हंस पड़ा। दोनों भाई हंसते हुये कार में बैठ गये।

किन्तु आज तो पारो ऐसे फुर्र से चल दी जैसे कभी खराब ही न हुई हो। न कोई झटका न कहीं खटका, पारो ने तो दोनों के सन्देह को दूर जा पटका। वह जैसे सड़क पर नहीं चल रही थी बल्कि हवा में तैर रही थी। गौरव ने देखा मामाजी के चेहरे पर विलक्षण मुस्कराहट फैली हुई है। उसने भवें उचका कर संजू को इशारा किया, "कमाल हो गया।"

सभी साइकिल वालों, रिक्शेवालों को पछाड़ती, बड़ा चौराहा पार कर सिविल लाइन के उतार-चढ़ाव पर पारो सरसराती चली जा रही थी।

कुछ ही दूर गये थे कि पारो झटके के साथ रुकी, मामाजी ने गियर बदला तो उलटे गियर में जा पड़ी, अब पारो उलटी दिशा में चलने लगी। गियर बदलना चाहा तो कुछ न हुआ, अटक गया। ब्रेक पर पैर मारा तो

वह भी काम नहीं कर रहा था। कार चढ़ाई पर थी अतः ढलान पर पीछे सरकने लगी। मामाजी गियर से जूझ रहे थे और पारो सरकती जा रही थी।

"यह क्या हुआ?" तीनों के मुंह से एक साथ निकला। मामाजी हैरान थे—यह अनहोनी कैसे हुई। गौरव परेशान। फुदक कर सीट पर मुड़कर बैठा। पीछे जो नजारा देखा तो सांस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई।

पारो पीछे की ओर लपक रही थी और उधर से एक लाल मारुति वढ़ी चली आ रही थी। 'अव हुई टक्कर', सोचकर गौरव घवरा गया। जोर से चिल्लाया, "मामाजी ब्रेक।"

हड़बड़ाकर ब्रेक जोर से दबाया और हैंड-ब्रेक पूरी ताकत से खींचा, लेकिन रुकी पारो अपनी मर्जी से, ठीक लाल मारुति से तीन-चार गज की दूरी पर।

टक्कर होने से तो बच गई, लेकिन पीछे हाल वुरा था। पारो के ढंग देखकर मारुति की सुकुमारी चालक घबरा गई। गति धीमी थी किन्तु कार का चक्का हड़वड़ी में गड़बड़ा गया और वह जा भिड़ी गेहूं के बोरों से जो एक ठेले पर लदे हुए थे। पीछे आता स्कूटर शतरंज के हाथी की टेढ़ी-मेढ़ी चाल चलता हुआ जाकर पेड़ से टकराते-टकराते बचा। चोट तो किसी को नहीं आई, सिर्फ बोरे के भार से मारुति के गाल पर गड्ढा पड़ गया। स्कूटर वाला और ठेलेवाला वरसने लगे बेचारी सुकुमारी पर। रुआंसी-सी कुछ बोल न पाई। तभी कार से फुदक कर सुकुमारी के पिता निकले। "यह क्या करती, वह जो सर्कस की कार उलटी चली आ रही थी," वह गरज कर वोले। लंबा-चौड़ा डील-डौल, घनी तावयुक्त मूछें, पुष्ठ काया और हाथ में बेंत लिये वह फौज के कमाण्डर जैसे लग रहे थे।

"ऐई... यहां आओ। तुम सर्कसवालों को सड़क पर कार चलाने का लाइसेंस किसने दिया?" वह फौजी,पुनः वेंत फटकारते हुये गरजा। और बाहर निकल कर तमाशा देख रहे मामाजी की ओर लपका। आगे-आगे फौजी, पीछे-पीछे स्कूटर वाला, ठेलेवाला और सुकुमारी चालक, दायें-बायें से और भी लोग पारो की तरफ वढ़ रहे थे। मामाजी अनिश्चित

से कार का दरवाजा पकड़े खड़े थे।

गौरव ने हाथ पकड़कर मामाजी को अन्दर खींचा। "जान प्यारी हो तो भाग लो, यहां से।"

"नहीं भई, मेरी गलती कहां... बता दें इनको," मामाजी ने हकलाते हुये कहा।

"कुछ नहीं, चलिए।" गौरव और संजू एक साथ बोले। वह अब भी कुछ तय नहीं कर पा रहे थे। दोनों ने उन्हें जबरदस्ती अन्दर खींच लिया। दूसरे ही क्षण पारो फौजी कमान्डर और भीड़ से बचकर वहां से चुपचाप खिसक ली।

"बच गये," संजू ने गहरी सांस ली।

"आज तो पारो ने आपको दिलवा दिये थे बेदाम के..." गौरव अपनी बात कह रहा था कि मामाजी ने उसे पूरा किया।

"ठीक कहते हो, जूत पतरम, शीश मध्यम, दे धमाधम ऐसी चलती कि हमारा नकशा ही बदल जाता," मामाजी ने अपनी गलती स्वीकार की।

"मेरी राय है चुपचाप घर लौट चलें," गौरव ने सुझाव दिया जिस पर संजू ने आपनी पूरी सहमति प्रकट की। पर मामाजी वापस अपने मस्ताना मूड में लौट चुके थे। पारो की चाल पर सीटियां बजा रहे थे। हर लचक पर दाद दिये जा रहे थे। विश्वास दिलाते हुए बोले, "फिक्र क्यों करते हो, अब पारो बार-बार थोड़ा ही धोखा देगी। फिर ये लो, मोती झील तो आ ही गई। आइसक्रीम खा लें।"

आइसक्रीम के नाम से ही संजू का निश्चय वहीं का वहीं जम गया। गौरव भी ढीला पड़ गया। धीमे से दोनों ने उत्तर दिया, "ठीक है, जैसा आप चाहें।"

बात पूरी भी नहीं हुई थी कि मोती झील आ गई। आज भीड़ कम थी इसलिये माहौल साफ-सुथरा दिख रहा था। झील का पानी सूर्य की रोशनी में चांदी-सा चमक रहा था।

"आहा," मामाजी खुश होकर बोले, "आज जगह साफ है चलो झील के किनारे ही गाड़ी खड़ी करें। मेरी पारो भी हवा खाती रहेगी।"

मामाजी ने कार कुछ आगे ले जाकर रोकी और रिवर्स गियर में बदलने लगे ताकि सड़क की ओर मुंह करके झील के किनारे खड़ी कर दी जाये। गियर बदला और गाड़ी धीरे-धीरे चल दी झील की ओर। मामाजी ने रोकने की कोशिश की तो लगा सारी मशीनरी जाम हो गई है। गियर अटक गया, ब्रेक ढीले पड़ गये। किनारा खुद व खुद पास आने लगा।

"मामाजी रोको... रोको..." गौरव और संजू चिल्लाये।

"क्या करूं, फिर अटक गया..." मामाजी के हाथ-पैर गियर, क्लच और ब्रेक से जूझ रहे थे। पारो पक्की जमीन पार कर उवड़-खावड़ पथरीले रास्ते पर डगमगा रही थी। झील की हवा खाने का नहीं आज पानी पीने का इरादा जान पड़ रहा था उसका।

"डुवायेंगे क्या?" संजू ने विगड़कर कहा।

वहुत सारे लोग हर दिशा से "रोको, रोको," चिल्लाते हुये आसपास जमा होने लगे।

"रफ्तार हलकी है, तुम दरवाजा खोलकर उधर से जमीन पर पैर अड़ा कर रोकने की कोशिश करो। मैं इधर से..."

"साइकिल की तरह?"

"हां।"

गौरव पीछे की सीट पर कूदा। संजू ने दरवाजा खोलकर जैसे ही पैर धरती पर टिकाना चाहा 'छपाक' से पैर पानी में पड़ा। उसी क्षण मामाजी ने ब्रेक पर पैर मारा और पारो थम गई, झील की लहरों से अठखेलियां करने को।

"बच गये," गौरव ने ठंडी सांस ली। इधर-उधर देखकर वह नाराजगी से बोला, "मोटर की मोटर-वोट वनने में कोई कसर तो नहीं रह गई थी।"

संजू से नहीं रहा गया, दनदनाता हुआ उतरा और विगड़कर वोला, "मैं नहीं जाऊंगा आपके साथ मामाजी। घर पैदल चला जाऊंगा लेकिन कार में नहीं।"

"अरे! संजू, संजू, मेरे प्यारे संजय।" झट कार से कूद कर मामाजी

संजू को मनाने लगे।

"नहीं मामाजी, पहले टक्कर होने वाली थी। फिर डूबने वाले थे। अजीब मजाक है। हम आइसक्रीम खाने जान हथेली पर लेकर चले हैं। मैं तो जा रहा हूं और अम्मा से शिकायत करूंगा। चलो गौरव।" संजू गुस्से से नाक-भौं सिकोड़ता हुआ चल दिया। मामाजी पीछे-पीछे दौड़े, "जीजी से कह कर मेरी शामत बुलायेगा। नहीं पार्थ नहीं, मेरे वीर अर्जुन। मेरे धनंजय ऐसा कदापि न करना। इस तुच्छ घटना का विलोचन क्या तुम्हारे शौर्य को शोभा देगा, मेरे वीभत्सु। शान्त हो, किरीटी। अपने इस मस्तक से जहां इन्द्र का दिया मुकुट सुशोभित होता है, इन क्रोध-रेखाओं को पोंछ डालो।" सदा की भांति संजू को अर्जुन के सारे नामों से संबोधित कर मामाजी अति नाटकीय ढंग से मनाने लगे। संजू को हंसी आ गई। मौके का फायदा उठा मामाजी ने विषय बदला, "अरे बेटा गौरव यहां समय क्यों बर्बाद कर रहे हो। इतनी देर में तो दो आइसक्रीम और खा लेते।"

आइसक्रीम खाते, गप्पें करते, दोनों हादसों की स्मृति धुंधली पड़ गई। वापस जाने के लिये जैसे ही कार में बैठे,गौरव ने याद दिलाया, "मामाजी खुले रास्ते से लौटें तो भला होगा। पारो जी आज उलटे मूड में हैं।"

मामाजी को सुझाव पसन्द आया। "हां, हां, वह स्टेट बैंक वाली सड़क ले लेते हैं। लम्बा रास्ता जरूर है पर वहां ज्यादा ट्रैफिक नहीं रहता," वह बोले। संजू प्रसन्न था।

पारो फर्र से स्टार्ट हो हवा में तैरती हुई चलने लगी। सड़क के दोनों ओर इमली के पेड़ों की घनी छांव थी और सड़क पर दो-एक रिक्शावालों और साइकिलवालों के अतिरिक्त दिन के इस समय सन्नाटा ही था। जिन्हें बैंक में काम होता वही इस मार्ग से आते-जाते और दिन में दो बजे के बाद से तो लोगों का आना-जाना भी कम हो जाता।

अभी बैंक के पास पहुंचे ही थे कि 'धांय-धांय' दो बार गोली चलने की आवाज आई। तभी देखा दो नकाबपोश बैंक से निकले, ठांय से हवा में एक और गोली दागी और मोटर साइकिल पर सवार हो चल दिये।

यह नजारा देखकर मामाजी चौंक पड़े। दोनों पैर क्लच और ब्रेक पर पड़े। वह नकावपोश उन्हीं की ओर बढ़े आ रहे थे।

"रोको मत, भागो मामाजी, पीछे वाले के हाथ में पिस्तौल है," गौरव ने जल्दी-जल्दी कहा।

"मामाजी जल्दी..." संजू के स्वर में घबराहट थी।

मामाजी ने गियर जो वदला तो रिवर्स गियर में जा अटका। जैसे ही उन्होंने कार चलाई, वह रिवर्स गियर में चलने लगी। मामाजी ने फिर गियर बदलने की कोशिश की लेकिन कुछ न हुआ। पारो उलटी चलने लगी। सामने से नकाबपोश निकट आ गये।

मोटर साइकिल 'सर्र' से वरावर से गुजरी, परन्तु पारो उनका साथ निभाने पर तुली थी। वह साथ-साथ चल रही थी। मोटर साइकिल सीधी और पारो उलटी। जो डाकू मोटर साइकिल चला रहा था वह यह देखकर घवरा गया। मोटर साइकिल डगमगा गई जिस पर पारो ने खांसकर ऐसा झटका दिया कि दोनों डाकू उछल पड़े। पिस्तौल तो हाथ से छिटक कर दूर जा पड़ी। लूट से भरा काला ब्रीफकेस अलग गिरा। मोटर साइकिल अपने आप चलकर पेड़ से जा टकराई और दोनों डाकू हवा में कलाबाजी खाकर धूल में धराशायी हो गये। तब कहीं जाकर मामाजी का ब्रेक लगा। इससे पहले कि नकाबपोश डाकू संभल पाते बैंक के सुरक्षा दल की गाड़ी आ पहुंची। पीछे-पीछे मैनेजर भी।

सुरक्षा गार्ड ने दोनों डकैतों को दबोच लिया। सारा माल बरामद हो गया। अभी मामाजी संभल भी न पाये थे कि मैनेजर दौड़कर पास आया और कहने लगा, "शुक्रिया जनाब, अपने कमाल कर दिखाया। क्या खूब कार चलाते हैं।" गौरव और संजू सकपका गये। मामाजी स्तब्ध सुनते रहे। मैनेजर को घेरे लोगों में से कोई कह रहा था "सीधी कार तो वहुतों को चलाते देखा है पर क्या रिवर्स गियर ड्राइविंग थी।" प्रशंसा से मामाजी का कद बढ़ना शुरू हो गया। वह उतरकर मैनेजर से हाथ मिलाते हुये बोले, "साहब तारीफ इस कार की है, पुरानी है लेकिन है लाजवाब।"

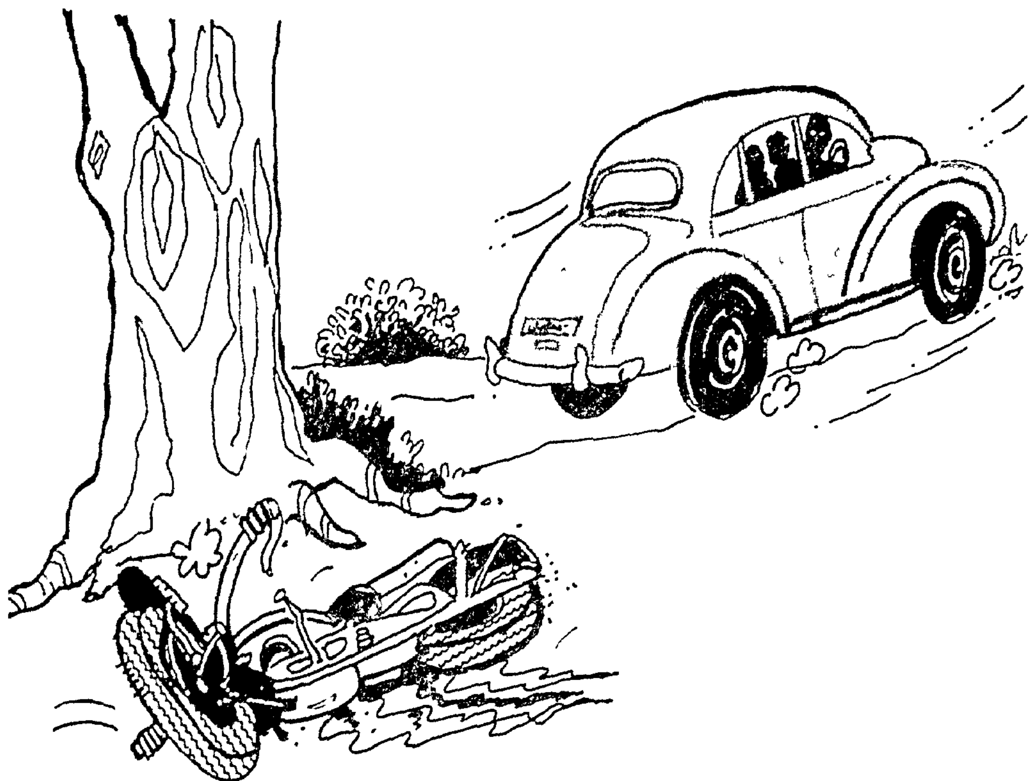
"बेशक," मैनेजर की नजर पारो की तरफ दौड़ी। कृतज्ञ हो उन्होंने

फिर से धन्यवाद किया।

जब सारी तहकीकात पूरी हुई, मामला निपटा और मामाजी घर की ओर चले तो मौका पाते ही बोले, "एंवेई कहते हो, आज पारो ने कमाल कर दिया। देखा सब पारो की कितनी बड़ाई कर रहे थे। मैनेजर बार-बार पूछ रहा था कि इस उपकार के बदले मैं क्या कर सकता हूं।"

"मामाजी छोटे मुंह बड़ी बात होती है। इसलिए मैं चुप रहा वरना..." गौरव ने मामाजी की बात को काटा। वह अभी बोल ही रहा था कि मामाजी बिगड़ कर पूछने लगे, "वरना, क्या करते तुम?"





"पारो के लिए एक अच्छा मैकेनिक ढूंढ़ने की सलाह देता," गौरव ने संक्षेप में कहा। मामाजी ने घूर कर गौरव की ओर देखा। कार की गति में विघ्न पड़ा ही था कि संजू ने चेतावनी दी, "मामाजी घर आ गया है। अब गियर को हाथ मत लगाइये। कहीं फिर रिवर्स गियर में डल गई तो मंजिल पर पहुंच कर भी दूर हो जायेंगे।"

गौरव और संजू के साथ मामाजी भी खिलखिलाकर हंस पड़े।

# प्यारी छतरी

"जीजी, आज मैं दोनों खिलाड़ियों को मैच दिखाने ले जाऊंगा। खतौली से फुटबॉल की टीम आई है," मामाजी ने अम्मा को मनाने की कोशिश की।

"हां, हां ले जाओ," अम्मा ने आज्ञा दे दी।

सुनते ही मामाजी ने लपक कर छतरी उठाई और बोले, "चलो भानजों तैयार हो जाओ।"

"लेकिन यह छतरी लेकर कहां जा रहे हो, आसमान में एक भी बादल नहीं," अम्मा ने टोका।

"धूप है...हो सकता है घटा घिर आये," उन्होंने बहाना किया।

"यूं क्यों नहीं कहते कि बिना छतरी के पल भर भी नहीं रह सकते। कोई अपनी टोपी, कलम, छड़ी को हर समय साथ रखता है, तुम हो कि छतरी से ही खेलते रहते हो," अम्मा से कहे बिना रहा नहीं गया।

मामाजी ने हंस कर बात टाल दी। वास्तव में घर में और बाहर दोनों जगह उनकी यह नई फोल्डिंग छतरी हर पल साथ रहती। धूप में तो छतरी लगाकर शान से चलते और सूरज ढलने पर छतरी की घड़ी बना उंगली में घुमाते हुये टहलते। और कुछ नहीं तो घर में बैठे-बैठे छतरी का बटन दबाकर खोलते-बंद करते या फिर यूं ही कमरे में छाता लगाये बैठे रहते। हर समय यही शौक था। छाता क्या था आसमान की तरह सिर पर छाया

रहता था। उनका बस चलता तो रात को भी छाते के साथ ही सोते। खीझकर एक दिन अम्मा ने कह डाला, ''जिस दिन यह टूटेगी उसी दिन जान छूटेगी।''

सुनकर मामाजी प्रसन्न ही हुये। जिक्र उनकी परम सहचरी प्यारी छतरी का जो था। अगर कभी गलती से भी उनकी छतरी के बारे में कोई पूछ बैठता तो मामाजी की बांछें खिल जातीं। बगैर प्रोत्साहन के वह छतरी की विशेष बनावट, यद्यपि वह आम छतरियों की भांति ही थी, उसके रख-रखाव के तरीके पर और छतरी के प्रयोग के लाभ पर अच्छा खासा प्रवचन सुना डालते। यह वात भी नहीं थी कि छतरी किसी ने भेंट की हो इसीलिये मामाजी उसके प्रति भावात्मक हों। वह तो एक दिन बाजार में, इम्पोंटिड सामान बेचने वाले से अपना पिंड छुड़ाने के लिये उन्होंने स्वयं ही खरीदी थी। फिर तो वह वस उनके मन भा गई।

गौरव और संजू अपनी कैप पहनकर नीचे आ गये। ''चलिये मामाजी,'' दोनों एक साथ वोले। मामाजी छतरी कलाई मे लटकाए तैयार खड़े थे।

''भई पारो को जुकाम हो गया है, बहुत छींकें आ रही हैं। इसलिये...'' वह सफाई देने लगे जिस पर संजू ने तुरन्त कटाक्ष किया, ''क्या मिस फायर (पीछे से धुंआ छोड़ना) कर रही है?'' मुंह से कार के खांसने की आवाज बनाकर उसने अपनी बात स्पष्ट की। मामाजी घिघिया कर हंसे, कुछ झेंपकर कुछ बात टालने की कोशिश में जब कुछ न सूझा तो इधर-उधर देख ठहाका मार कर हंस पड़े।

''चलो बस में चलते हैं,'' उन्होंने सुझाव दिया।

''हमें तो आदत है। आप अपने को संभाल लीजियेगा,'' गौरव ने चेतावनी दी।

''छतरी छोड़ दीजिये, आप अपने को संभालेंगे या छतरी को,'' संजू ने समझाया।

''तुम फिक्र न करो,'' कह कर उन्होंने कस कर छतरी बगल में दबा ली। शायद इस डर से कि कहीं सचमुच संजू रख ही न आये। मूठ बगल

से सामने झांक रही थी और नोक भाले की तरह पीछे निकली हुई थी।

उसी प्रकार वह बस में चढ़ गये। बस में भीड़ काफी थी। फुर्ती से मामाजी आगे बढ़े। "तुम दोनों बैठो मैं टिकट लेता हूं," कह कर वह कन्डक्टर की तरफ मुड़े और बोले, "तीन स्टेडियम के देना," गौरव वहीं खड़ा रहा।

टिकट लेकर घूमे तो कुछ रुकावट महसूस कर मामाजी रुके। फिर आगे बढ़ने की चेष्टा की तो पीछे से 'चिरर' की आवाज आई। साथ ही कोई चिल्लाया, "अरे, अरे।" और एक हाथ उनके कंधे पर पड़ा। मुड़कर देखा कि छतरी का तार एक सज्जन के कुर्ते में अटका है और करीब पांच इंच लंबे झरोखे से मैली बनियान झांक रही है।

"हाय मेरा कुर्ता फाड़ दिया," वह रुआंसा होकर बोला, फिर एकदम बिगड़ गया, "अजीब हैं आप, छतरी खंजर की तरह निकाले चलते हैं। संभाल के क्यों नहीं रखते?" उसने डांट लगाई।

मामाजी ने झट अपनी छतरी कुर्ते से ऐसे छुड़ाई जैसे देख रहे हों कि कहीं छतरी को खरोंच तो नहीं आई। हकला कर बोले, "मुझे क्या पता था कि आप पीछे खड़े हैं?"

"अरे साहब मैं तो कह रहा हूं अपनी छतरी ठीक से संभाल नहीं सकते तो लेकर क्यों चलते हो। मेरा कुर्ता तो काम से गया।" वह उसी सुर में बिगड़े जा रहा था।

अब मामाजी भी तैश में आ गये। छतरी को कलेजे से लगा ऐंठकर बोले, "बात तो ऐसी कर रहे हैं जैसे नया कुर्ता पहने हों, गदर के जमाने का लग रहा है। कोई उंगली भी लगा दे तो तार-तार हो बिखर जाये, ये तो फिर भी छतरी थी।"

बात तो मामाजी की सही थी। कुर्ता था तो काफी घिसा हुआ। मोटी खादी पारदर्शी जाली बन चुकी थी। यहां तक कि उसमें लगे सोने के बटन मांगे हुए से लग रहे थे। जरूर कोई कंजूस सेठ होगा। किन्तु कुर्ते पर लांछन सुनकर वह और भी भड़क उठा। "साब, आपने मेरा कुर्ता फाड़ा क्यों?" वह आगबबूला हो गया।

"अभी कहा तो..." मामाजी बहस करने पर उतारू थे पर गौरव ने बीच में टोका, "मामाजी जाने भी दीजिये।" उसने उनका हाथ पकड़ कर खींचा।

"अजी जाने कैसे दीजिये। मेरे कुर्ते के पैसे धरिये, सत्ताइस रुपये पैंसठ पैसे सेल्स टैक्स समेत। खादी ग्रामोद्योग से खरीदा..." वह कहने लगा।

"क्लीयरेंस सेल में लिया होगा..." मामाजी ने कटाक्ष किया। ऐंठकर बोले, "मुझे इस कुर्ते के साथ कोई दस रुपये भी दे तो भी न लूं। हुं... सत्ताइस रुपये पैंसठ पैसे," कह कर मामाजी मुड़कर सीट की तरफ बढ़े ही थे कि पीछे से सेठ ने कॉलर पकड़ लिया। काफी तू-तू, मैं-मैं हुई। देखते ही देखते और लोग भी झगड़े में शामिल हो गये। सभी सेठ के फटे कुर्ते का पक्ष लेकर सहानुभूति जताने लगे, और पहले मामाजी को फिर उनकी छतरी को भला-बुरा कहने लगे। अपनी प्यारी छतरी के लिये उनसे ताने न सहे गये। वह बेचैन हो गये। क्रोधित होकर आगे लपके, किन्तु हुजूम को अपने खिलाफ पाकर रुक गये।

"मामाजी खतम भी करिये..." गौरव ने समझाया।

कुर्ते की जीर्ण अवस्था पर बहस करते-करते मामला सात रुपये पच्चीस पैसे पर जाकर तय हुआ। मामाजी ने भुनभुनाते हुए भुगतान किया। तभी स्टेडियम आ गया। तीनों बस से उतर गये।

"मामाजी लाइये छतरी मैं पकड़ लूं," संजू ने प्रस्ताव रखा।

"हां, मामाजी संजू संभाल कर रखेगा," गौरव ने संजू की बात समझते हुए हां में हां मिलाई। कम से कम मैच के दौरान दुर्घटना से बचे रहने का यही अच्छा उपाय था। मगर मामाजी कहां मानने वाले थे। छतरी को सीने से चिपका कर बड़े भोलेपन से बोले, "फिक्र न करो भीड़ में खो नहीं दूंगा। कस के पकड़े हूं।" मामाजी का उत्तर सुनकर दोनों ने एक आह भरी और लाचार हो सबसे आगे की पंक्ति में जा बैठे।

शुरू-शुरू में शहर की टीम ने जल्दी से दो गोल कर दिये। उत्साह से वातावरण गूंज उठा। खतौली की टीम के खिलाफ लोग नारे लगाने लगे

और अपने खिलाड़ियों के नाम ले लेकर जय-जयकार करने लगे। फिर तो खतौली की टीम को ऐसा तैश आया कि देखते ही देखते उन्होंने स्कोर बराबर कर दिया। शहर की टीम वाले अपने बचाव में खेलने लगे। खेल जोरों पर था। पासा पलटते देर न लगती। कभी कोई किसी पर हावी होता तो कभी कोई। एक-एक मिनट पर खेल नये मोड़ लेता हुआ नजर आ रहा था। दोनों टीमों ने दो-दो गोले बना लिये। आखिर का आधा घंटा रह गया था, अब शहर वाले फिर खतौली की टीम पर हावी हो गये थे।

उसी समय सूरज दायीं दीवार से ऊपर उठकर चमकने लगा। गौरव, संजू ने अपनी कैप आंखों के साम़ने कर ली। मामाजी कुछ परेशान नजर आये, कुछ देर आंखों पर हाथ से साया करके बैठे रहे। उधर मैदान में सेन्टर फॉरवर्ड ने फुटबॉल अपने काबू में कर लिया था। बॉल लुड़काता हुआ विरोधी गोल की तरफ बढ़ रहा था। अन्य खिलाड़ी दूर थे। उसने एक किक मार कर बॉल हवा में उछाल दिया, इस इरादे से कि आगे जाकर बॉल लपक लेगा, बॉल 'डी' में होगा, एक किक और फिर गोल।

उसी पल आंखों पर से हाथ हटाकर धूप से बचने के लिये मामाजी ने छाते का बटन दबाया। बटन दबाने की देर थी कि 'शू, शू' राकेट की तरह छतरी उलटी हो आकाश में उड़ी, मानों सूरज को साया पहुंचाने जा रही हो। खाली डंडा मामाजी के हाथ में रह गया। ठीक मैदान के बीच पहुंच पैराशूट की तरह खुल गई, हवा में उछले हुए बॉल के साथ-साथ नीचे आने लगी। यह देख कर गोल के लिए तैयार खड़ा खिलाड़ी हड़बड़ा गया। क्षणभर में ही बॉल ने नीचे टप्पा खाया और छतरी खिलाड़ी के सिर पर ढक्कन की तरह आकर बैठ गई। उसका चेहरा और गर्दन छतरी में छिप गये। वह छतरी से जूझता रह गया। इतनी देर में विरोधी पक्ष वाले बॉल को दूर ले गये। तब कहीं रेफरी की सीटी बजी। आकाश से इस आकस्मिक छत्र-वर्षा को देख वह भी स्तब्ध रह गया था। इसीलिए तत्काल सीटी नहीं बजा पाया।

खेल रुकते ही मामाजी अपनी प्यारी छतरी उठाने के लिये मैदान में कूद पड़े।

"मामाजी रुकिये," गौरव ने चिल्लाकर उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन मामाजी कहां रुकने वाले थे, तब तक तो वह खिलाड़ियों के बीच पहुंच चुके थे।

सबसे पहले कुंठित खिलाड़ी ने उनका सामना किया। "अच्छा तो यह तुम्हारी छतरी थी," उस खिलाड़ी ने डांटकर कहा।

"भई मैं..." मामाजी ने समझाने की कोशिश की।

वह खीझा हुआ तो था ही, गुस्से से मामाजी का कॉलर पकड़कर बोला, "मेरा गोल खो दिया। साथियों, घेर लो।" उसने आवाज लगाई। तभी एक और सीटी बजी। उसे खतौली वाली टीम का मैनेजर बजा रहा था। वह बहुत प्रसन्न नजर आ रहा था, आखिर उन पर गोल होते-होते जो बच गया था।

"देर न करिये, खेल का समय खतम होने में कुछ ही देर है," वह जरा तेज आवाज में बोला।

"अजी खेल तो इन्होंने खतम कर दिया। जीता जिताया मैच ड्रा हो गया," खिलाड़ी बोले। तभी शहर की टीम का मैनेजर भी वहां आ पहुंचा। "आप तो कहेंगे ही, साहब। यह तो उसी जगह से शुरू होगा, लाइये बॉल दीजिये," वह अकड़कर बोला।

"ये कौन-सी नियम की पुस्तक में लिखा है? भला हवा में भी जाकर बॉल छोड़ा जा सकता है? मैच वहीं से होगा जहां सीटी बजी थी। चलिये तैयार हो जाइये," दूसरे मैनेजर ने कहा।

बात तो सही थी उसकी। सुनकर सब सन्नाटे में आ गये। सारे शहर वाले खिलाड़ी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे और मामाजी पर लगे गुस्सा होने। खिलाड़ियों से घिरे मामाजी अपनी छतरी सीने से चिपकाये झंडे के समान खड़े थे। यदि खेल का मैदान नहीं होता तो अवश्य ही खिलाड़ी इसे पानीपत का मैदान बना देते और मामाजी को अस्सी घाव वाला राणा सांगा। आज मरम्मत होते-होते बच ही गई।

खिसिया कर कुछ खिलाड़ी बिगड़े, "ठीक है, खेल शुरू करते हैं पहले इन्हें स्टेडियम से निकालिये।"

खतौली की टीम के मैनेजर को इसमें कोई आपत्ति न थी, तुरन्त मान गया और शहर की टीम के मैनेजर ने मामाजी को धकेलते हुये घोषणा की, "भाइयो बेधड़क होकर गोल करो, बाधा हटा रहा हूं।"

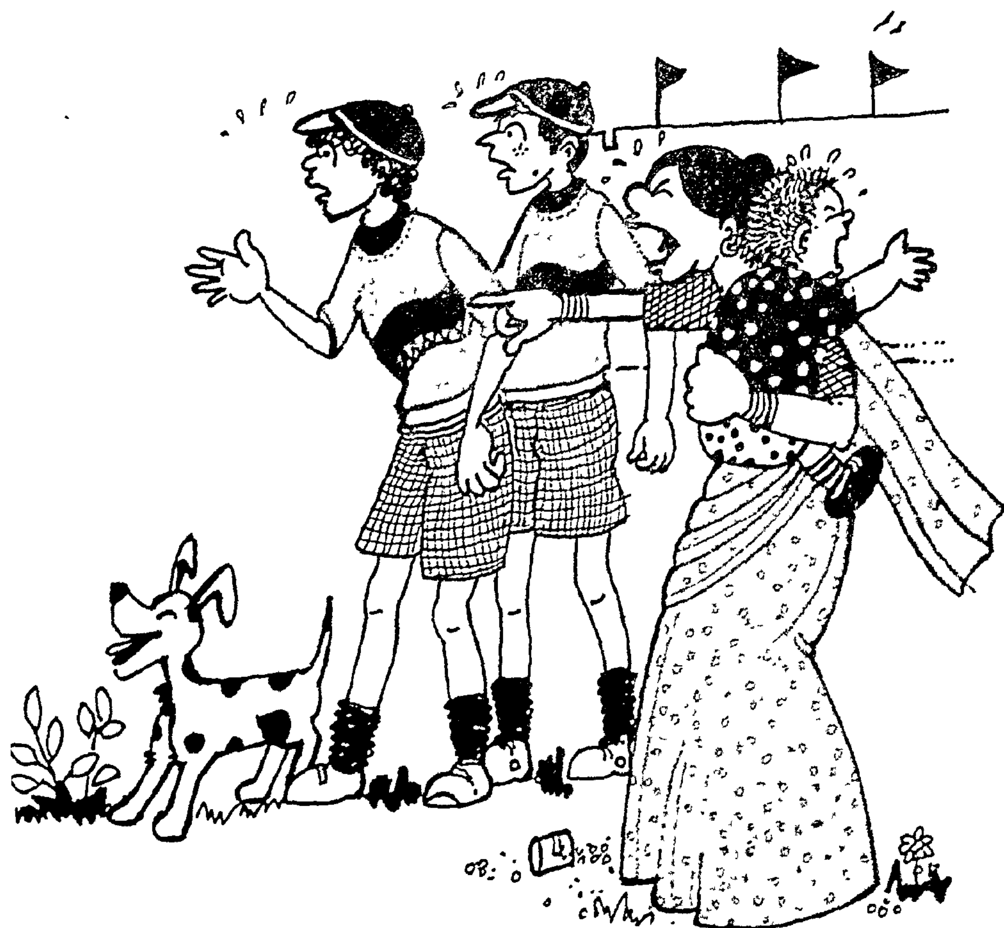
उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर वह मामाजी की बांह पकड़ कर बाहर ले जाने लगा। गौरव और संजू चुपचाप उनके पीछे-पीछे हो लिये।



मामाजी ने झटके से बांह छुड़ाई। और वहीं रुक गये। स्टेडियम के दरवाजे पर संजू बिगड़कर बोला, "सारा मजा किरकिरा कर दिया, कह रहा था मुझे छतरी दे दो। अब यहीं से मैच पूरा तो देख लें," गौरव वहीं रुक गया। मामाजी कुछ न बोल कर चुपचाप खड़े रहे।

तभी एक महिला वहां अपने रोते बच्चे को गोद में संभाले, चुप कराने के लिये आकर खड़ी हो गई। मैच से ऊब कर बहुत से लोग बाहर जाने लगे थे। अचानक एक छैला आकर महिला से टकराया और उसके हाथ से पर्स छीन कर भागा। "मेरा पर्स," महिला चिल्लायी।

मामाजी ने न आव देखा न ताव, एक छलांग भर, छतरी का डंडा आगे



बढ़ाकर उस छैले की टांग में फंसाकर अपनी तरफ खींचा। वह धड़ाम से मुंह के बल आ गिरा। पर्स उसके हाथ से छूट महिला के कदमों में जा पड़ा। "क्यों बे चोरी करता है," मामाजी ने छैला का कॉलर पकड़कर उठाया और उसे शोरगुल सुनकर उधर की ओर ही आते हुए सिपाहियों को सौंप दिया।

हाथ झाड़कर वह गौरव और संजू के पास आये। दोनों मुस्करा रहे थे।

"भाईसाहब बहुत-बहुत शुक्रिया। आपने..." वह महिला कह रही थी कि भागते हुये खतौली वाला मैनेजर आ पहुंचा।

"क्या हुआ प्रतिभा?" उसने हांफते हुए पूछा।

"ये मेरे पति हैं?" महिला ने परिचय करा कर अपने पति से कहा, "अजी इन्होंने चोर को मार कर मेरा पर्स वापस दिलाया है।"

"धन्यवाद...आप," उसने विनम्रता से कहा पर मामाजी को देख वह मैनेजर भौचक्का रह गया।

"हमारे लिये तो आप फरिश्ते की तरह आये। पहले मैच हारने से बचाया वरना खतौली वाले तो इन्हें शहर में न घुसने देते। फिर मेरा पर्स..." वह महिला कृतज्ञता से बोले जा रही थी कि मामाजी ने सकुचाकर कहा, "मैंने कहां यह तो मेरी प्यारी छतरी का कमाल है।"

"तो फिर इसे मुझे इस मैच की यादगार के रूप में भेंट कर दीजिये," वह सकुचाते हुये बोली।

मामाजी इस अवांछित निवेदन से सकपका गये। हड़बड़ाहट में कुछ उत्तर न सूझा किन्तु गौरव और संजू खिल उठे। तपाक से उनकी ओर से बोले, "जरूर, जरूर।"

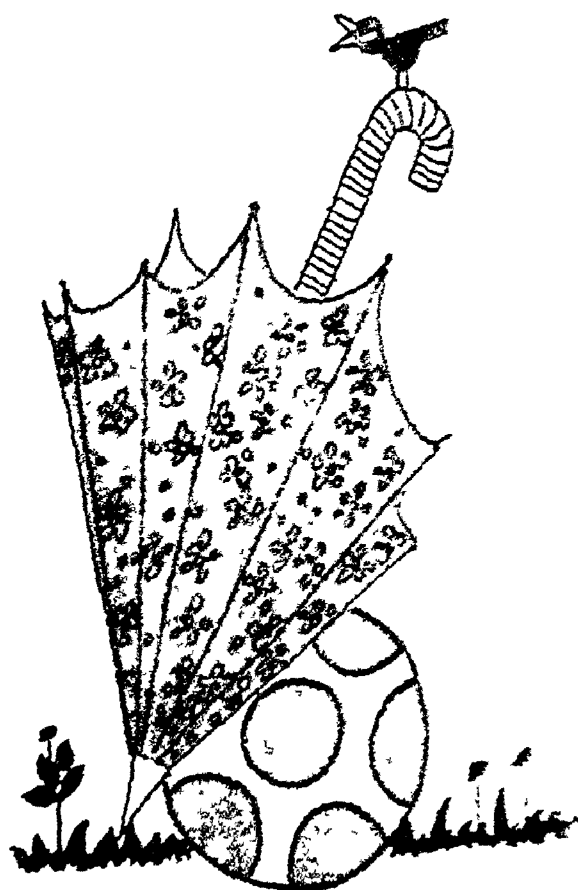
"हां, हां, आप ले लीजिये," मामाजी धीमे स्वर में बोले। हाथ बढ़ाकर उन्होंने अपनी छतरी उन्हें सौंप दी। धन्यवाद करते हुये कृतज्ञ दम्पति ने तुरन्त भेंट ग्रहण कर ली।

"इससे पहले कि मामाजी अपना इरादा बदल लें यहां से फूट लो," गौरव संजू के कान में फुसफुसाया।

"चलिये मामाजी, अम्मा राह देखती होंगी," संजू ने जोर से कहा।

मामाजी ने फिर मुड़कर भी न देखा। प्यारी छतरी की याद करते, मंद-मंद मुस्कराते मामाजी दोनों के साथ चल दिये। "भई एक छतरी गई तो क्या अव दूसरी रख लूंगा," मामाजी ने कहा।

"नहीं, विलकुल नहीं," गौरव और संजू ने जोर से मना किया। मामाजी समझ गये और खिलखिलाकर हंस दिये।



उधर गुड़िया आज्ञा पाते ही, छूकर क्या देखना, दोनों हाथों से मूंछें कसके पकड़कर लटक गई। दम लगाकर जोर-जोर से खींचने लगी। "मम्मी छूटती ही नहीं।" वह खीझ कर चिल्लायी।

"आह," मामाजी दर्द से चिल्लाये।

"छोड़ दो, गुड़िया, छोड़ दो," सभी कहने लगे। दौड़कर गौरव और संजू ने गुड़िया को अलग किया। मुंह को हथेलियों से दबाये मामाजी ऊपर चले गये।

उनका सारा चेहरा दुख रहा था। मूंछों के चारों ओर सूजन आ गई थी। वह बार-बार मुंह दबा रहे थे और रह-रह कर कराह उठते थे।

"मामाजी देखिये इतनी बड़ी मूंछों से नुकसान ही हुआ न," गौरव ने सहानुभूति प्रकट की। लेकिन मामाजी टस से मस न हुये। कराहते हुये मद्धम स्वर में कहते रहे, "मूंछें कैसी छोटी कर लें, ये राजपूती आन का प्रतीक हैं। हमारी शान है। और... हाय," वह दर्द से कराहने लगे।

सारे दिन तकलीफ देने के बाद शाम तक जाकर कहीं सूजन उतरी। मामाजी का दिल बहलाने के लिए गौरव और संजू पास ही बाजार तक उन्हें घुमाने ले गये।

बीच बाजार में एक छः फुटे पहलवान से मुठभेड़ हो गई। आंख के सुरमे से मेल खाती उसकी बड़ी-बड़ी मूंछें कोरों से नुकीली दिख रही थीं। ऐंठी हुई मूंछों पर ताव देकर वह मामाजी की ठोढ़ी को ऊंची कर पूछने लगा, "क्यों बे! कहां से आया है?"

"मामाजी ये यहां के मशहूर दादा हैं," गौरव कान में फुसफुसाया। मामाजी संभल गये। अपने ऊपर संयम रख कर विनम्रता से पूछने लगे, "क्यों भई क्या बात है?"

"हमसे टक्कर लेते हो?" उसने गरज कर पूछा।

"कौन कहता है?" मामाजी ने निडर होकर पूछा।

"ये मूंछें," वह चिल्लाकर बोला और कहने लगा, "हमसे बड़ी मूंछ पालना चाहते हो, जानते नहीं यह इलाका हमारा है। यहां हमसे बड़ी मूंछ कोई नहीं रख सकता। तुम्हारी जुर्रत कैसे हुई।"

"अरे... लेकिन..." मामाजी के समझ में नहीं आया कि क्या कहें। गौरव ने उनकी तरफ से बोलते हुए पहलवान को कहा, "मामाजी अभी कल ही तो यहां आये हैं।"

"ठीक है, ठीक है, मूंछे छोटी कर लेना और सुनो जब तक मूंछें काट न लो, तब तक घर के बाहर कदम मत रखना। यहां एक ही मुच्छड़ बस सकता है," दादा धमका कर अपने रास्ते चल दिया।

मामाजी मुंह बाये देखते रहे। फिर झुंझला कर बोले, "आजादी है, इसका मतलब यह तो नहीं कि लोगों की मूंछें छोटी करवाते घूमें। यह तो सरासर अन्याय है।"

"मामाजी, दो ही रास्ते हैं या तो हनुमान प्रसाद के शिष्य बनकर दंड-बैठक पेलिये, तभी दादा से मुकाबला कर सकते हैं या फिर मूंछें कटा लीजिये," गौरव ने सुझाव दिया।

"दूसरा आसान है," साथ में संजू ने जल्दी से जोड़ दिया।

"क्या कहते हो, हम मूंछें कटा लें। अरे ये सुरेन्द्रनाथ सहाय की मूंछे हैं, छटेंगी तो किसी भले काम के लिये, ऐसे ही नहीं," मामाजी ने गरज कर मूंछों पर ताव देते हुए कहा।

ऐसा क्या भला काम हो सकता है, जिससे मामाजी की इन भौंडी मूंछों से छुटकारा मिल जाये। इसी चिंता में गौरव और संजू रात को देर तक करवटें बदलते रहे। बहुत तरकीबें लड़ाईं। कोई भी नहीं जंची। मायूसी के साथ-साथ नींद ने उन्हें आ घेरा।

अगले दिन इतवार था। इसलिये गौरव देर तक सोता रहा। उठा तो आलस से बिस्तर पर ही पड़ा रहा। मामाजी वहीं सामान फैलाये दाढ़ी बना रहे थे। बहुत सावधानी से उस्तरा चला रहे थे। अचानक संजू की उत्साह भरी पुकार, "मामाजी! मामाजी!" ने उन्हें चौंका दिया। धड़धड़ाते हुये वह कमरे में आया और बोला, "मामाजी आज आपको लड़की वाले देखने आ रहे हैं। हमारे लिये मामी का इंतजाम हो रहा है। ठीक ग्यारह बजे। अम्मा कह रही थीं।"

अचानक मेज पर से हजामत का ब्रश गिर पड़ा और पानी उलट गया।

"आह!" मामाजी पीड़ा से चीख उठे। उस्तरा फिसला और एक तरफ की एक चौथाई मूंछ साफ हो गई।

"क्या करते हो संजू, ऐसी खबर सुना कर हिला दिया तुमने। मेरी आधी मूंछ ही साफ हो गई," मामाजी ने दुखी मन से कहा।

"बस इसी बात पर पूरी साफ कर डालिये, आप ही तो कह रहे थे किसी भले काम के लिये ही मूंछ काटेंगे," गौरव प्रसन्न हो सुझाव देने लगा, किन्तु मामाजी ने उसकी बात पूरी न होने दी।

"यह भला काम है?" मामाजी ने ऐसी दृष्टि डाली जैसे कह रहे हों क्या तुम्हारा ऊपर का दर्जा खाली है। उस्तरा रख कर बोले, "अरे यह तो मेरी गिरफ्तारी का वारन्ट है, मेरे ऊपर कहर टूट पड़ा है, प्रलय की सूचना दे दी है तुमने।"

"लेकिन थोड़ी मूंछ तो साफ हो ही गई है," संजू ने टोका।

"सारी तो नहीं हुई," मामाजी आशा से बोले।

"तो क्या अधकटी मूंछ लेकर जायेंगे सबके सामने? अम्मा नाराज होंगी," गौरव ने सचेत किया।

"जीजी ने भी मुश्किल में डाल दिया। उनका मन रखने के लिए जाना तो पड़ेगा ही, सबके बीच," माथा ठोक कर मामाजी क्षणभर परेशान रहे फिर एकाएक खिल उठे। "मूंछ तो सही सलामत रहेगी जनाब, हमारे शौक हमेशा दूसरों का भला करते आये हैं, लेकिन आज हमारी रक्षा करेगी ये प्यारी मूंछ।"

"कैसे?" दोनों ने एक साथ पूछा।

"देखते जाओ, हां जाकर जीजी की भवें बनाने वाली पेंसिल तो ले आओ, उन्हें कुछ बताना नहीं," मामाजी ने आदेश दिया।

संजू नीचे गया और फौरन ही वापस आकर बोला, "अम्मा के पास तो पेंसिल नहीं है।"

"कोई बात नहीं," वह बोले और दाढ़ी बनाने में लग गये। मामाजी ने अपनी मूंछें करीने से छांटी और नहा-धोकर तैयार हो गये।

दूर से, कटी हुई मूंछ की जगह सपाट खाल चमक रही थी। मामाजी

ने माचिस की तीली जलाई, फिर फूंक कर बुझाई। ठंडी होने पर तीली की काली नोंक से मूंछ बनाने लगे। बिलकुल एक चित्रकार की तरह मूंछ का एक-एक बाल बनाने लगे।

"वाह, मामाजी क्या तरकीब लगाई, कमाल कर दिया आपने," गौरव ने तारीफ की।

मामाजी ने खुशी से हाथ हवा में उठाकर नारा लगाया, "मूंछ बढ़ा के।"

"हय्या" गौरव और संजू ने अनुसरण किया और हंस-हंसकर बिस्तर पर लोट लगाने लगे।

सारी माचिस फुंक गई तब कहीं जाकर मूंछें बनीं। दूर से जरा भी अटपटा नहीं लग रहा था। मूंछे असली लग रहीं थीं।

नीचे पहुंचे तो सबसे पहले अम्मा ने सफाई दी, "यूं ही मेरी सहेली के भाई मिलने आ रहे हैं। कर्नल हैं फौज में, उनकी लड़की अच्छी है। जरा ठीक से..." अम्मा अपनी बात पूरी भी न कर पाई थीं कि मामाजी ने उन्हें संतुष्ट किया, "तुम फिक्र न करो। मैं ठीक-ठीक बात करूंगा।"

"कोई ऐसी वैसी हरकत..." अम्मा ने संशय से कहा पर मामाजी ने जोरदार ढंग से गर्दन हिला कर नहीं, नहीं कर दिया।

वायदे के अनुसार मामाजी एक से एक दिलचस्प किस्से सुनाते रहे। कर्नल साहब ने निशानेबाजी की बात छेड़ी तो मामाजी के उत्साह का ठिकाना न रहा। उछल-उछल कर आप बीती सुना रहे थे। इसी उछलकूद में उंगली मूंछ पर पड़ी और कालिख थोड़ी फैल गई। मूंछ एक तरफ से लम्बी हो गई। बातों-बातों में ऐसे उलझे कि भूल ही गये कि आधी मूंछ बनावटी है। गौरव ने इशारे से समझाना चाहा कि मूंछों पर कुछ लगा है। उन्होंने उंगली से होठों के ऊपर पोंछा। बनी हुई मूंछों के बीच का हिस्सा पुछ गया। गौरव ने अपना माथा ठोका। मामाजी की शक्ल देख कर सभी हंस पड़े। एक तरफ की मूंछ नीचे की ओर फैली हुई थी और बीच का भाग सपाट। ठोढ़ी और गाल पर काले धब्बे थे।

"बरखुरदार," कर्नल साहब पास आकर बड़े प्यार से हंसते-हंसते

बोले, ''बाजार में एक से एक बढ़िया मूंछें मिलती हैं। असली-नकली का फर्क ही नहीं मालूम चलता, वहीं से खरीद कर अपना शौक पूरा करो।'' और हंसते हुए बार-बार मामाजी को छोटा-सा बच्चा जानकर कंधा थपथपा कर चले गये।

उनके जाते ही अम्मा बरस पड़ीं। ''क्या जरूरत थी ऐसी बचकानी



हरकत करने की। अब कर्नल साहब कभी भी रिश्ता लेकर नहीं आयेंगे, ऐसे के लिये," वह बिगड़ कर बोलीं।

"आहा हा। आनन्द ही आनन्द," मामाजी योगियों की तरह प्रसन्नता से नाचने लगे। अम्मा को मनाते हुये बोले, "मैं तो इसी तरह तुम्हारा भाई बना रहना चाहता हूं। देखा मेरी मूंछों ने रक्षा कर ली, शादी के जंजाल से बचा लिया।"

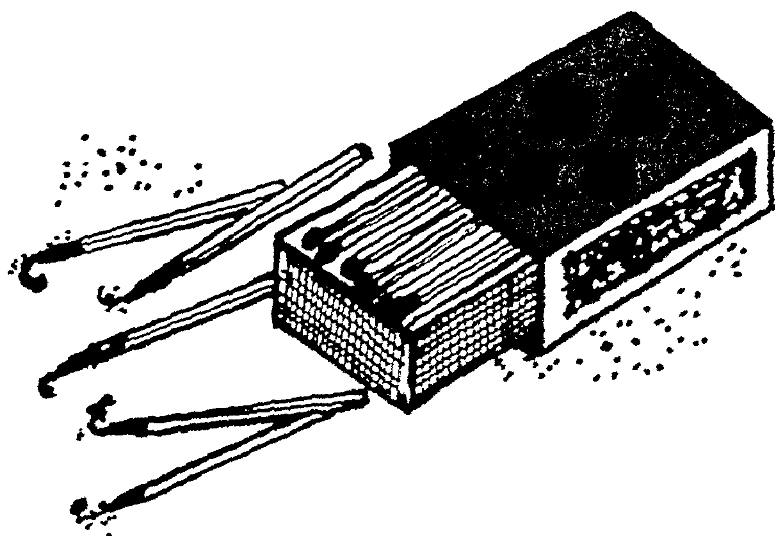
अम्मा हंस पड़ीं। मामाजी तुरन्त ऊपर की ओर जाने लगे।

"कहां चले खाना लग गया है," अम्मा ने रोका।

'जरा मूंछें साफ कर आऊं। काम खतम तो शौक खतम।"

"टन-टना-टन," गाते हुए मामाजी चले। पीछे-पीछे गौरव और संजू भी सीटी बजाते नारा लगाने लगे—

शान दिखाओ मूंछ बढ़ा के
मान दिखाओ मूंछ बढ़ा के
और जान बचाओ मूंछ बढ़ा के।



# सी बी टी की कुछ श्रेष्ठ पुस्तकें

पारस पत्थर
उषा यादव

खाई के उस पार
श्रीपाद विष्णु कानडे

भेड़िया बच्चे
ए.के. श्रीकुमार

अपराजिता
कमला शर्मा

कम्प्यूटर के जाल में
इरा सक्सैना

अपूर्व साहस
नीलिमा सिन्हा

नेत्रहीन साक्षी
अरूप कुमार दत्त

जंगल में वे दो दिन
कावेरी भट्ट

काजीरंगा में आखिरी दांव
अरूप कुमार दत्त

## सी बी टी की कुछ उत्कृष्ट चित्र पुस्तकें

किटी पतंग

कावेरी भट्ट

बेचारा रिबन

सुकुमार शंकर

विश्वास की जीत

मित्र फूकन

गुड़िया का भालू

जूही सिन्हा

कुकू घड़ी

कावेरी भट्ट

प्यासी मैना

प्रतिभा नाथ

साहसी तारा

सिगरून श्रीवास्तव

नये मित्र

दीपा अग्रवाल

